हिन्दी पाक्षिक

सेमन्या कण्वघाटी

RNI No.: UTTHIN/2013/54659

वर्ष-12 अंक-17 हरिद्वार, मंगलवार,15 जुलाई, 2025 मूल्य-दो रूपया मात्र पृष्ठ-8

राष्ट्रीय खेलों के बाद उत्तराखंड में खेलों की नई उड़ान

सीएम धामी ने दिए लिगेसी प्लान पर तेज़ से कार्यवाही के निर्देश

देहरादून, (संवाददाता)। उत्तराखंड में आयोजित 38वें राष्ट्रीय खेलों की अभूतपूर्व सफलता के बाद अब राज्य सरकार खेलों को लेकर नई दृष्टि और रणनीति के साथ आगे बढ़ रही है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने राज्य के खिलाड़ियों को निरंतर उच्च स्तरीय प्रशिक्षण और सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए राष्ट्रीय खेलों के दौरान निर्मित और उन्नत किए गए खेल ढांचे का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करने हेतु मुख्य सचिव को शीघ्र कार्ययोजना तैयार करने और उस पर तेजी से अमल करने के निर्देश दिए हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि 38वें राष्ट्रीय खेल केवल एक आयोजन नहीं थे, बल्कि यह उत्तराखंड की खेल यात्रा में ऐतिहासिक मोड़ सिद्ध हुए हैं। पहली बार राज्य ने 100 से अधिक पदक जीतकर पदक तालिका में सातवां स्थान प्राप्त किया और अपने प्रदर्शन से पूरे देश का ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने कहा कि खेलों के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता और खिलाड़ियों की मेहनत ने मिलकर यह असाधारण उपलब्धि संभव बनाई है।

लिगेसी प्लानः खेल ढांचे का बेहतर और स्थायी उपयोग

राष्ट्रीय खेलों के आयोजन के लिए तैयार की गई अंतरराष्ट्रीय स्तर की सुविधाएं अब राज्य के खिलाड़ियों के लिए प्रशिक्षण केंद्र के रूप में उपयोग होंगी। देहरादून के महाराणा प्रताप स्पोर्ट्स कॉलेज और हल्द्वानी के इंदिरा गांधी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स को आधुनिक सुविधाओं से युक्त किया गया है। इसके साथ ही राज्य के आठ शहरों में 23 खेल अकादमियों की स्थापना की योजना भी लिगेसी प्लान का हिस्सा है।

मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि खेल ढांचे को निष्क्रिय नहीं रहने दिया जाएगा, बल्कि इसका अधिकतम उपयोग किया जाएगा ताकि राज्य के युवा प्रतिभाओं को अपने घर के पास ही उच्च स्तरीय प्रशिक्षण मिल सके।

नई खेल नीति से खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ा

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2021 में लागू नई खेल नीति के सकारात्मक परिणाम दिखने लगे हैं। इसमें खिलाड़ियों को उनकी उपलब्धियों के अनुसार आकर्षक प्रोत्साहन राशि, सरकारी नौकरी, छात्रवृत्तियां और सम्मान देने का प्रावधान किया गया है। ओलंपिक स्तर के पदक विजेताओं को दो करोड़ रुपये तक की राशि देने की घोषणा से खिलाड़ियों में नया उत्साह आया है।

खेल विश्वविद्यालय का निर्माण ङ्क दूरदृष्टि से लिया गया फैसला

हल्द्वानी में बनने वाला खेल विश्वविद्यालय राज्य की खेल संस्कृति को संस्थागत रूप देगा। यह न केवल प्रशिक्षण और रिसर्च का केंद्र बनेगा, बल्कि कोचिंग, खेल विज्ञान, फिजियोथेरेपी, मैनेजमेंट आदि में भी युवाओं को अवसर प्रदान करेगा। मुख्यमंत्री धामी ने कहा, "उत्तराखंड को आज खेल भूमि के रूप में देखा जा रहा है, यह पूरे राज्य के लिए गर्व की बात है। राष्ट्रीय खेलों की सफलता ने एक नई चेतना जागृत की है। सरकार खेल और खिलाड़ियों के सर्वांगीण विकास के लिए पूरी तन्मयता से जुटी हुई है। मैदानों से लेकर पहाड़ों तक हर जगह खेल प्रतिभाओं के लिए एक नया और उज्जवल भविष्य आकार ले रहा है।

कांवड़ यात्रा से पहले हरिद्वार में अतिक्रमण पर चला बुलडोजर

हरिद्वार(संवाददाता)। आगामी 11 जुलाई से शुरू हो रहे कांवड़ मेले को देखते हुए हरिद्वार प्रशासन और नगर निगम ने अतिक्रमण हटाने के लिए विशेष अभियान शुरू कर दिया है। इस अभियान के तहत नगर निगम के मुख्य नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. गंभीर तालियान के नेतृत्व में चंडीघाट से बस अड्डे तक सघन कार्रवाई की गई। अभियान का उद्देश्य मेला मार्ग को सुगम, सुव्यवस्थित और सुरक्षित बनाना है, ताकि देशभर से आने वाले करोड़ों शिवभक्तों को किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े।

जिलाधिकारी मयूर दीक्षित के निर्देशों के क्रम में नगर निगम के चलाए जा रहे अतिक्रमण हटाओ अभियान में व्यापारियों ने भी प्रशासन का सहयोग किया। शहर के प्रमुख क्षेत्रों में व्यापारियों ने स्वयं अपने अतिक्रमण हटा लिए, जिससे टकराव की स्थिति नहीं बनी और अभियान शांतिपूर्ण ढंग से चला। डॉ. गंभीर तालियान ने बताया कि यह अभियान 11 जुलाई तक लगातार जारी रहेगा। उन्होंने स्पष्ट चेतावनी दी कि यदि कोई दोबारा अतिक्रमण करता है तो चालानी कार्रवाई की जाएगी।

नगर निगम की टीम ने चंडीघाट से लेकर रोडवेज बस अड्डे तक फैले अवैध अतिक्रमण को हटाया। इस दौरान नगर निगम के अधिकारियों की टीम में एसएनए ऋषभ उनियाल अक्षय तोमर पटवारी नरेंद्र कंबोज मायापुर चैकी इंचार्ज सुनील पंतअन्य निगम कर्मी और पुलिस स्टाफ शामिल रहे।

डॉ. तालियान ने कहा कि कांवड़ मेला एक धार्मिक और राष्ट्रीय महत्व का आयोजन है, जिसमें देशभर से शिवभक्त लाखों की संख्या में हरिद्वार पहुंचते हैं। ऐसे में मेला मार्गों पर अतिक्रमण की कोई भी स्थिति भक्तों की सुरक्षा में बाधा बन सकती है। उन्होंने व्यापार मंडलों से भी सहयोग की अपील की, ताकि मेला शांतिपूर्ण और व्यवस्थित रूप से संपन्न हो सके। उन्होंने कहा कि प्रशासन का उद्देश्य किसी को परेशान करना नहीं, बल्कि जनहित और श्रद्धालुओं की सुविधा को सर्वोपरि रखना है।

अभियान के दौरान महालक्ष्मी व्यापार मंडल के पदाधिकारियों और कई स्थानीय व्यापारियों ने नगर निगम का समर्थन किया। प्रमुख उपस्थित लोगों में शामिल थेरूसंजय चैहान (शहर उपाध्यक्ष, महालक्ष्मी व्यापार मंडल)रामनाथ, बलवीर सिंह चैहान, राकेश चैहानविकास चंद्रा, किशोर, ऋषभ चैहान आदिसभी ने साफ-सफाई और अतिक्रमणमुक्त हरिद्वार के लिए प्रशासन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने की बात कही। प्रशासन का फोकस केवल अतिक्रमण हटाने पर नहीं, बल्कि श्रद्धालुओं की सुरक्षा, ट्रैफिक व्यवस्था, स्वच्छता और आपात सेवाओं की उपलब्धता पर भी है। नगर निगम और जिला प्रशासन मिलकर यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि हर शिवभक्त को सुगमता से गंगा दर्शन व जलाभिषेक का अवसर मिले।

गुरू के प्रति आभार व्यक्त करने का पर्व है गुरु पूर्णिमा: डॉ संतोषानंद देव

अवधूत मंडल आश्रम में धूमधाम से मनाया गया, गुरू पूर्णिमा महोत्सव

हरिद्वार (संवाददाता)। श्री अवधूत मंडल आश्रम बाबा हीरादास हनुमान मंदिर में गुरु पूर्णिमा का पर्व हर्षोल्लास के साथ धूमधाम से मनाया गया। प्रातः काल भक्तों देश के कोने कोने से पधारे भक्तों ने अपने गुरु डॉ संतोषानंद देव महाराज को फल फूल मिठाई एवं दक्षिणा भेंटकर चरण पखार कर गुरू पूजन किया। डॉ स्वामी संतोषानंद देव जी ने भी सभी भक्तों को मनोवांछित फल प्राप्ति का आशीर्वाद दिया। उन्होंने कहा कि अवधूत मंडल आश्रम बाबा हीरादास हनुमान मंदिर के संस्थापक बाबा सरयू दास, बाबा हीरादास, बाबा गोपाल दास, बाबा रामेश्वर देव, बाबा महेश्वर देव एवं महामंडलेश्वर स्वामी सत्यदेव का पूजन किया जाता। हर वर्ष गुरु पूर्णिमा महोत्सव धूमधाम से मनाया जाता है। प्रातः काल हवन पूजन, गुरु पूजन के साथ ईस्ट हनुमान की आरती संपन्न हुई, छप्पन भोग लगाया गया। इसके साथ ही भक्तों को दीक्षा कार्यक्रम संपन्न हुआ। इसके बाद महामंडलेश्वर, संतों एवं आमजनों के लिए भंडारा शुरू किया गया। हजारों की संख्या में लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। वहीं इस मौके पर ब्लड डोनेशन कैंप लगाया है। साथ शानदार झांकी का प्रदर्शन किया गया। अपने आशीर्वचन में डॉ स्वामी संतोषानंद देव महाराज ने कहा आध्यात्मिक गुरु की शरण में आने वाले व्यक्ति की तृष्णा समाप्त होती है और वह वास्तविक आनंद को प्राप्त करता है। गुरू से मिले ज्ञान का उपयोग कर संसारिक बंधनों से मुक्त होकर ईश्वर भक्ति में लीन होता है। क्योंकि संसारिक मोह माया में फंसे व्यक्ति को दुख के सिवा कुछ भी प्राप्त नहीं होता है। गुरू के प्रति आभार व्यक्त करने का पर्व है गुरु पूर्णिमा और यह भारत वर्ष में प्रमुखता से मनाया जाता है। यह परंपरा पुरातन काल से चली आ रही है। आज भी लोकसभा भक्ति के साथ गुरु पूर्णिमा का पर मनाते हैं।

सम्पादकीय

संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता

तमिलनाडु के बाद महाराष्ट्र में जिस तरह से हिंदी भाषा के खिलाफ विरोध की सियासत तेज हुई है, वह न केवल चिंताजनक है, बल्कि देश की भाषिक एकता और सामाजिक सौहार्द के लिए भी एक गंभीर खतरे की घंटी है। त्रिभाषा फॉर्मूले के बहाने, जिस तरह मराठी अस्मिता के नाम पर हिंदी को "थोपा गया" बताकर विरोध किया जा रहा है, वह तर्क से अधिक राजनीतिक मजबूरी की उपज प्रतीत होती है। यह विरोध उस राज्य में हो रहा है जिसकी राजधानी मुंबई हिंदी सिनेमा का केंद्र है, जहां लाखों लोग हिंदी बोलते, समझते और लिखते हैं। यही नहीं, महाराष्ट्र के शिक्षा ढांचे में हिंदी की उपस्थिति कोई नई बात नहीं है। ऐसे में सवाल उठता है कि अचानक हिंदी विरोध क्यों और किसके लिए ? इसकी पृष्ठभूमि में देखें तो यह राजनीतिक दलों की खोई हुई जमीन को फिर से पाने की रणनीति दिखती है। शिवसेना (उद्धव गुट) और मनसे के लिए "मराठी अस्मिता" एक भावनात्मक तुरुप का पत्ता रहा है, लेकिन जब यह अस्मिता किसी दूसरी भारतीय भाषा के खिलाफ खड़ी की जाती है, तब यह विचार मराठी संस्कृति का नहीं, बल्कि अवसरवादी राजनीति का प्रतीक बन जाता है। यह विडंबना ही है कि जो नेता कल तक नई शिक्षा नीति को समर्थन दे रहे थे, वही आज उसके खिलाफ प्रदर्शन की अगुवाई कर रहे हैं। त्रिभाषा फॉर्मूला देश में भाषाई समरसता को बढ़ावा देने की मंशा से लाया गया था। मातृभाषा, राष्ट्रभाषा और वैश्विक भाषा को समन्वित करने की एक नीति। लेकिन इसमें भी हिंदी की जगह अन्य भारतीय भाषा चुनने का विकल्प सरकार ने दिया है, जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि इसे "थोपना" नहीं कहा जा सकता। बावजूद इसके, हिंदी विरोध की राजनीति यह संकेत देती है कि मुद्दा भाषा नहीं, बल्कि सत्ता की राजनीति है। भाषाएं जोडने का कार्य करती हैं, तोडने का नहीं। दुर्भाग्य से, भारत में राजनीतिक लाभ के लिए भाषाओं को भी खेमों में बांटने की परंपरा बनती जा रही है। जो दल अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों का विरोध नहीं करते, वे भारतीय भाषाओं को एक-दूसरे के विरुद्ध खड़ा कर रहे हैं, यह एक विडंबना है और राष्ट्रीय एकता के लिए गंभीर चुनौती भी। इस समय आवश्यकता है एक संतुलित दृष्टिकोण की। हिंदी, मराठी, तमिल, तेलुगु ख्र हर भाषा हमारी साझी सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा है। इन्हें एक-दूसरे के विरोध में खड़ा करना नहीं, बल्कि साथ लेकर चलना ही भारत की मूल आत्मा है। भाषाएं संस्कृति का आधार हैं, लेकिन जब वे राजनीति का औजार बन जाती हैं, तो केवल संस्कृति ही नहीं, देश भी घायल होता है। बहरहाल, महाराष्ट्र में गैर-मराठी भाषी लोगों की संख्या और प्रतिशत अलग-अलग स्रोतों और अनुमानों के आधार पर भिन्न हो सकती है, लेकिन 2011 की जनगणना के आंकड़ों से कुछ स्पष्ट जानकारी मिलती है। 2011 की जनगणना के अनुसार, महाराष्ट्र की कुल जनसंख्या में से लगभग 69। 93 फीसदी लोगों की मातृभाषा मराठी थी। इसका मतलब है कि लगभग 30। 07 फीसदी आबादी गैर-मराठी भाषी थी। मुंबई जैसे बड़े शहरी क्षेत्रों में गैर-मराठी भाषी आबादी का प्रतिशत राज्य के औसत से अधिक हो सकता है। कुछ रिपोर्टों में मुंबई में 40 फीसदी मराठी भाषी और 60 फीसदी गैर-मराठी भाषी होने का भी उल्लेख है, जिसमें हिंदी बोलने वाले सबसे बड़े समूह हैं। जागरूक नागरिकों को इस खेल को पहचानना होगा और भाषाई सद्भाव की उस विरासत को संजोकर रखना होगा, जिसने भारत को विविधता में एकता का अद्भुत उदाहरण बनाया है।

ट्रंप को नोबेल नामित

पाकिस्तान ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के नाम की सिफारिश नोबेल शांति पुरस्कार-2026 के लिए की है। हालांकि ट्रंप ने कहा है कि वह कुछ भी कर लें उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार नहीं मिलेगा। ट्रंप पिछले दिनों भारत-पाकिस्तान संघर्ष के बाद के बाद कई दफा दावा कर चुके हैं कि उन्होंने ही दोनों पड़ोसी देशों के बीच संघर्ष रुकवाया था। हालांकि भारत सरकार ने उनके इस दावे को सिरे से खारिज कर दिया। पिछले दिनों ट्रंप ने पाकिस्तान के कथित फील्ड मार्शल आसिम मुनीर को दावत पर बुलाया था और उसके तीन दिन बाद ही शनिवार को पाकिस्तान सरकार ने कहा कि भारत के साथ संघर्ष में ट्रंप का हस्तक्षेप एक वास्तविक शांतिदूत के रूप में उनकी भूमिका और बातचीत के माध्यम से संघर्ष समाधान के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। ट्रंप ने हाल के समय में कई जगहों पर संघर्षरत देशों के बीच संघर्ष समाप्त करने में पहल की बातें कही हैं। रूस-यूक्रेन के बीच काफी समय से चले आ रहे युद्ध को रुकवाने की भी कोशिश की। यूक्रेन के राष्ट्रपति को बुला कर झिड़का भी, लेकिन युद्ध अभी तक थमा नहीं है। ट्रंप ने कहा कि वह कांगो और रवांडा के बीच संघर्ष को रोकने लिए अद्भुत संधि करा रहे हैं। ट्रंप नोबेल शांति पुरस्कार की लालसा को अरसे से अपने दिल में पाले हुए हैं, लेकिन वैश्विक घटनाक्रम के मद्देनजर उनकी लालसा पूरी होती दिखलाई नहीं पड़ रही। बीते चौबीस घंटे का घटनाक्रम तो एकदम से उनकी इच्छा पर कड़ा आघात करने वाला रहा। अमेरिका ने युद्धरत ईरान और इजरायल के बीच तनाव को कम करने की बात तो कही, मगर रविवार तड़के इजरायल की तरफ से ईरान पर बम डाल कर ईरान के तीन सामरिक ठिकाने नष्ट कर दिए। इस हरकत को युद्ध रुकवाने का कार्य तो नहीं ही कहा जा सकता। शांति तो वार्ता की टेबल पर होती है, लेकिन हमलावर होकर एक पक्ष का साथ देते हुए दूसरे पक्ष को शस्त्रविहीन कर देना शांति स्थापना करार नहीं दिया जा सकता। वैसे भी पाकिस्तान ने भले ही शांति के नोबेल के लिए ट्रंप को नामित करने की बात कही है, लेकिन उसके अपने देश में ही इसका तीव्र विरोध शुरू हो गया है। संयुक्त राष्ट्र में पाकिस्तान की राजूदत रह चुकीं मलीहा लोधी ने एक्स पर लिखा है कि ट्रंप को नोबेल नामित करने संबंधी सरकार का फैसला दुर्भाग्यपूर्ण है।

सत्य ज्ञान का घूंट पिलाने वाले गुरु

-अशोक "प्रवृद्ध"

भारतीय सभ्यता- संस्कृति, धर्म- दर्शन, श्रुति- वांग्मय में गुरु को ब्रह्म से भी ऊंचा स्थान व अधिक महत्व प्रदान किया गया है। गुरु को प्रेरक, सत्य ज्ञान प्रदाता, प्रथम आभास देने वाला, सच्ची लौ जगाने वाला और कुशल आखेटक कहा गया है, जो अपने शिष्य को अज्ञान रुपी अंधकार से दूर करके सत्य ज्ञान से प्रकाशित कर उसमें सन्मार्ग पर चलने की शक्ति प्रदान करता है, मार्ग दिखाता है। अपने उपदेश की वाणों से बिंध कर उसमें प्रेम की पीर संचरित कर देता है। साधक को अपनी आध्यात्मिक साधना में, व्यक्ति को अपने निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करने में कोई भी विघ्न उपस्थित होने पर किसी विद्वान से मार्ग निर्देशन प्राप्त करने की अनिवार्यता होने के कारण साधक, व्यक्ति को गुरु की आवश्यकता होती है। गुरु की प्राप्ति द्वारा साधक अथवा व्यक्ति के हृदय से संशय व आशंका की भावनाएं समाप्त हो जाती हैं। उसे साधना अथवा व्यक्तिगत लक्ष्य के मार्ग में एक मददगार अर्थात सहायक मिल जाता है, जो उसे विघ्नों और बाधाओं से परे निकाल सकता है। उसके पैर डगमगाने पर उसे सहारा दे सकता है। उसके साधना अथवा कार्य में निराश होने पर उसमे आत्मविश्वास जगाकर आगे बढ़ा सकता है अथवा आगे बढ़ने की प्रेरणा दे सकता है। गुरु का योग्य होना उतना ही आवश्यक है जितना कि शिष्य का। क्योंकि यदि गुरू स्वयं ही अयोग्य होगा तो वह तो शिष्य को ही ले डूबेगा। गुरु की सेवा में शिष्य को भी सर्वात्मना समर्पित हो जाना चाहिए। गुरु की असीम कृपा शिष्य पर होती है। वस्तुत: वह ब्रह्म की कृपा पर उतना नहीं आश्रित रहता जितना गुरु की। वैदिक मतानुसार सत्य राह दिखने वाला परमात्मा का ही उसके अनंत दिव्य गुणों के कारण असंख्य नामों में से एक नाम गुरु भी है। इसीलिए भारतीय संस्कृति में गुरु और गोविंद में कोई फर्क नहीं माना गया है। गृ शब्दे इस धातु से गुरु शब्द बना है। निरुक्त में कहा गया है -यो धर्म्यान् शब्दान गृनात्युपदिशति स गुरु: स पूर्वेषामपि गुरु: कालेनानवच्छेदात। योग जो सत्य धर्म प्रतिपादक, सकल विद्यायुक्त वेदों का उपदेश करता, सृष्टि की आदि में अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा और ब्रह्मादि गुरुओं का भी गुरु और जिसका नाश कभी नहीं होता इसलिए उस परमेश्वर का नाम गुरु है। गुरु तो माता, पिता, आचार्य और अतिथि होते हैं। उनकी सेवा करनी, उनसे विद्या, शिक्षा लेनी-देनी शिष्य और गुरु का कार्य है। गुरु की व्युत्पति करते हुए कहा गया है- गारयति ज्ञानम् इति गुरु: । गुरु उसे कहते हैं, जो ज्ञान का घूंट पिलाए। ज्ञान का मानव जाति के लिए अति महत्व होने की भांति ही ज्ञान का वितरण करने वाले का भी मनुष्य जाति मात्र के लिए महत्व है। ज्ञान की प्राप्ति में गुरु का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। यही कारण है कि वेदों से लेकर वर्तमान भारतीय साहित्य में गुरु की अपार महिमागान की गई है। वेदों में स्पष्ट रूप से गुरु का वर्णन नहीं है, लेकिन वेद में अनेक स्थानों पर विभिन्न देवताओं की स्तुतिगान करते हुए उनसे ज्ञान दान की प्रार्थना की गई है। इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से उन्हें गुरु माना गया है तथा उनके महत्व को स्वीकार गया है। उपनिषद ग्रंथों में भी सर्वत्र गुरु की महिमा गान की गई है। आत्मा साधारण बुद्धि वाले पुरुष द्वारा कहे जाने पर अच्छी तरह नहीं जाना जा सकता। अभेद्दर्शी आचार्य द्वारा उपदेश किये गये इस आत्मा में कोई गति नहीं है, क्योंकि यह सूक्ष्म से सूक्ष्म तथा दुर्विज्ञेय है। उपनिषदों में गुरु के सुविज्ञ और शिष्य के लगनशील होने पर बहुत जोर दिया गया है। वेदांत के मतानुसार आत्मा का साक्षात्कार कर चुके सिद्ध पुरुषों द्वारा जो जीवन्मुक्त (जीवित रहकर भी मुक्त) रहते हैं, विधिपूर्वक वेद-वेदांग पढ़े हुए, नित्य, नैमितिक, प्रायश्चित और उपासना नामक कर्मों द्वारा समस्त पापों से रहित साधक को ज्ञान का उपदेश करना चाहिए। वेदान्त के ही नहीं, समस्त विद्याओं को पढने के लिए प्रारंभ में ही अधिकारी तथा उसके उद्देश्य की चर्चा की जाती थी। रामायण में वशिष्ठ मुनि के गुरुत्व का एक महान गौरवपूर्ण इतिहास का वर्णन अंकित है। सूर्यवंशी इक्ष्वाकु राजा के कुलगुरु वशिष्ठ ने त्रिशंकु, हरिश्चन्द्र, रोहिताश्व आदि को सतयुग में ज्ञान दान किया था और बाद में वही त्रेता में दिलीप, रघु, अज, दशरथ और राम आदि के भी गुरु थे। इतने लम्बे काल तक एक व्यक्ति का जीना असम्भव है। यही कारण है कि विद्वतजन वशिष्ठ को एक व्यक्ति नहीं वरन एक परंपरा मानना ही उचित समझते हैं। इसी भांति व्यास भी एक परंपरा है। वेदों के विभक्तिकार और अठारह पुराणों के रचयिता कदापि एक नहीं हो सकते। मनु महाराज ने विद्यार्थियों (शिष्यों) को धर्म का उपदेश करते समय माता-पिता एवं गुरु की महिमा गाई है। मनुस्मृति में अनेक प्रकार से गुरु को महान बत्ताते हुए कहा है कि गुरु की सेवा द्वारा ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है। प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन से इस सत्य का सत्यापन होता है कि भारतीय संस्कृति में अनेक महानुभावों को गुरु के आशीर्वाद एवं सानिध्य से ही देवत्व की प्राप्ति हुई है। शांतनु नन्दन देवव्रत को भीष्म बनाने में ऋषि परशुराम की अहम भूमिका रही थी। चाणक्य ने चंद्रगुप्त के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। समर्थ स्वामी रामदास ने शिवाजी महाराज को राष्ट्रवादी राजा बनाया था। स्वामी विवेकानंद ने स्वामी रामकृष्ण परमहंस से दीक्षा ली थी एवं उनके सानिध्य में ही अपना जीवन प्रारम्भ किया था। इतिहास इस बात का साक्षी है कि इन महानुभावों को देवत्व प्राप्त करने के लिए गुरु के श्रीचरणों में जाना पड़ा है। इस प्रकार के कई उदाहरणों से हमारा भारतीय इतिहास भरा पड़ा है। अपने गुरु को देवता के समान मानने वाले आरुणि अथवा उद्दालक ने अपनी गुरु-भक्ति से गुरु धौम्य को भी अमर बना दिया, जो खेत से बहते पानी को रोकने की गुरु की आज्ञापूर्ति के लिए पानी न रुकता देखकर मेड़ पर ही लेट गया था। भवभूति ने गुरु के बारे में कहा है- गुरु बुद्धिमान और जड़ दोनों ही प्रकार के शिष्यों को समान रूप से विद्या प्रदान करता है, परन्तु जड़ शिष्य दुर्भाग्य से बुद्धिमान की अपेक्षा कम ग्रहण कर पाता है। सच्चे गुरु की खोज में भगवान बुद्ध कई वर्षों तक जंगलों में विचरते रहे और अंतत: उन्हें अपना गुरु स्वयं बनना पड़ा था। बुद्ध कुक्कुट मिश्र की भांति नहीं थे, जो गुरु की वाणी का पांच दिन अध्ययन कर, वेदान्त शास्त्रों का तीन दिन मनन कर तथा तर्कशास्त्र को सूंघकर ही अपने को अद्वितीय ज्ञानी समझने, मानने लगे थे। प्राचीन ग्रंथों में पराशर नन्दन व्यास को महाशाल शौनकादि कुलपतियों तथा गुरुओं के भी परम गुरु साक्षात वादरायण माना गया है। पुराणों में व्यास परमपूज्य घोषित किये गए हैं। कतिपय विद्वानों के अनुसार कृष्ण द्वैपायण वेदव्यास वेद, पुराण, महाभारत, वेदान्त-दर्शन (ब्रह्मसूत्र), सैंकड़ों गीताएँ, शारीरिक सूत्र, योगशास्त्र के साथ ही कई व्यास स्मृतियों के रचयिता हैं। ऐसा माना जाता है कि वर्तमान का सम्पूर्ण विश्व विज्ञान एवं साहित्यिक वांग्मय भगवान व्यास का उच्छिष्टत है। कहा है- व्यासोच्छिष्टं जगत्सर्वम्। कृष्ण द्वैपायण वेदव्यास का जन्म आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को उत्तराषाढ़ नक्षत्र में हुआ माना जाता है। इसलिए आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा गुरु पूर्णिमा या व्यास पूर्णिमा के नाम से प्रसिद्ध है। भारतीय संस्कृति में भगवान शिव को आदिगुरू, प्रथम गुरु की संज्ञा प्राप्त है। पौराणिक मान्यतानुसार भगवान शंकर ने सप्तऋषियों को योग की दीक्षा देना भी आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा की तिथि के दिन से प्रारम्भ किया था। प्राचीन काल में भारत के गुरुकुलों में गुरु पूर्णिमा को महोत्सव का स्वरूप देते हुए एक विशेष दिवस के रूप में मनाया जाता था। गुरूकुल से सम्बंधित अनेक मुख्य कार्य गुरु पूर्णिमा के दिन ही सम्पन्न किए जाते थे। गुरु पूर्णिमा के शुभ मुहूर्त पर ही नए छात्रों को गुरूकुल में प्रवेश प्रदान किया जाता था। इसलिए गुरु पूर्णिमा दिवस गुरूकुल में छात्र प्रवेश दिवस के रूप में मनाया जाता था। सभी जिज्ञासु छात्र इस दिन पूज्य गुरुदेव के समक्ष आकर हाथों में समिधा लेकर और स्वयं को समिधा रूप में अर्पित करने का संकल्प लेते हुए पूज्य गुरुदेव के समक्ष आकर अंतर्मन में ज्ञान ज्योति प्रज्वलित करने के लिए आदरपूर्वक प्रार्थना करते थे। गुरु पूर्णिमा के दिन ही गुरुकुलों में दीक्षांत समारोह आयोजन किए जाते थे। गुरु पूर्णिमा की मंगल बेला में ही छात्रों को स्नातक उपाधियां प्रदान की जाती थीं। गुरु की सभी शिक्षाओं को आत्मसात कर लेने वाले विद्यार्थी, जिनकी कुशलता व क्षमता पर गुरु को संदेह नहीं रहता था, उन्हें इस दिन उपाधियां प्रदान की जाती थीं। वे गुरु चरणों में बैठकर प्रण लेते थे कि हे गुरुवर, आपके सान्निध्य में रहकर, आपकी कृपा से हमने जो ज्ञान अर्जित किया है, उसे लोक हित और कल्याण के लिए ही उपयोग करेंगे। अपने परम पूज्य गुरुदेव को दक्षिणा देकर छात्र अपने कार्य क्षेत्र में उतरते थे। इस प्रकार प्राचीन काल में गुरु पूर्णिमा के दिन गुरुकुलों में गुरु का कुल बढ़ता भी था और विश्व में फैलता भी था। जैन एवं बौद्ध धर्मावलम्बियों के लिए भी गुरु पूर्णिमा का दिन विशेष महत्व का माना जाता है। जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों में भगवान महावीर 24वें व परम तीर्थंकर के रूप में परिगणित हैं। भगवान महावीर ने आषाढ़ पूर्णिमा के दिन इंद्रभूति गौतम को अपने प्रथम शिष्य के रूप में स्वीकार किया था अर्थात भगवान महावीर ने गौतम को दीक्षित कर उसे अपना प्रथम शिष्य बनाने का गौरव प्रदान किया था। यही कारण है कि जैनी लोग गुरु पूर्णिमा धूमधाम से मनाते हैं कि इस दिन उन्हें भगवान महावीर गुरु रूप में मिले थे। बौद्ध पंथ के अनुसार बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्त करने के बाद प्रथम बार आषाढ़ पूर्णिमा के दिन ही पांच परिव्राजकों को धम्मोपदेश दिया।

मुख्यमंत्री धामी का ग्रीन एण्ड क्लीन कांवड़ यात्रा का सपना हो रहा साकार

मुख्यमंत्री के निर्देश पर बनाया गया कांवड़ यात्रा मोबाइल एप कांवड़ियों द्वारा मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी तथा जिला प्रशासन का किया गया आभार व्यक्त

हरिद्वार (संवाददाता) । मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के आदेशों के अनुपालन में तथा जिलाधिकारी मयूर दीक्षित के निर्देशन में कांवड़ यात्रा को स्वच्छ, सुन्दर व पर्यावरणीय अनुकूल बनाने के लिए विशेष पहल की गई है। जिसके अन्तर्गत कांवड़ यात्रा पर आने वाले श्रद्धालुओ को स्वच्छता व पर्यावरण के प्रति जागरूक करने के साथ जिला प्रशासन द्वारा स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। ग्रीन एण्ड क्लीन कांवड़ यात्रा के सफल आयोजन हेतु अल्प समय में ही कांवड़ यात्रा मोबाइल एप का निर्माण भी किया गया है।

की गई व्यवस्थाओं पर कांवड़ियों द्वारा मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी तथा जिला प्रशासन का किया गया आभार व्यक्त।

देश के विभिन्न कौनों से कांवड़ यात्रा पर हरिद्वार पहुँचने वाले शिव भक्तों एवं श्रद्धालुओं हेतु यात्रा मार्ग एवं कांवड़ मेला क्षेत्र में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के आदेशों के क्रम में जिलाधिकारी मयूर दीक्षित के निर्देशन में जिला प्रशासन द्वारा की गई व्यवस्थाओं यथा-पेयजल, शौचालय, स्नान, सफाई व्यवस्था, चिकित्सा सुविधा, विद्युत एवं प्रकाश व्यवस्था, पेयजल आदि व्यवस्थाओं की कांवड़ियों एवं श्रद्धालुओं द्वारा भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी तथा जिला प्रशासन का आभार व्यक्त किया।

डीएम तथा एसएसपी स्वयं ले रहे पल-पल की खबर

कांवड़ यात्रा के सफलतापूर्वक आयोजन हेतु जिलाधिकारी मयूर दीक्षित तथा एसएसपी प्रमेन्द्र सिंह डोबाल द्वारा स्वयं विभिन्न क्षेत्रों का लगातार औचक निरीक्षण करते हुए व्यवस्थाओं को परख के साथ ही विभिन्न माध्यमों से भी यात्रा मार्ग पर संचालित गतिविधियों पर पैनी नज़र रखते हुए पल-पल की खबर रखी जा रही है। जिलाधिकारी मयूर दीक्षित ने बताया कि श्रावण मास में आयोजित होने वाली कांवड़ यात्रा का धार्मिक, आध्यत्मिक व सांस्कृतिक रूप से बहुत ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि कांवड़ मेले को सुरक्षित, सुव्यवस्थित और सुचा रूप से संचालित करने एवं यात्रा पर आने वाले श्रद्धालुओं की यात्रा को सरल, सुखद व सुरक्षित बनाने के लिए जिला प्रशासन द्वारा विशेष इन्तजाम किये गये हैं। उन्होंने बताया कि यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं तथा जन-मानस की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए सुपर जोनल, जोनल व सेक्टर मजिस्ट्रटों के साथ ही सम्बन्धित विभागों के कार्मिकों की ड्यूटी लगाई गई ताकि किसी भी प्रकार की समस्या उत्पन्न न हो और यदि फिर भी कोई समस्या उत्पन्न होती है तो उसका बहुत ही कम समय में त्वरित गति से समाधान किया जा सके।

रियल टाईम मोनीटरिंग की व्यवस्था

कांवड़ मेले को सुरक्षित, सुव्यवस्थित और सुचा रूप से संचालित करने के लिए तीसरी आंख यानि सीसीटीवी कैमरो, ड्रोन आदि के माध्यम से 24*7 की तर्ज पर लगातार मोनीटरिंग की जा रही है। मेले के दौरान मोनीटरिंग हेतु सीसीआर में कन्ट्रोल रूम की स्थापना करते हुए पर्याप्त संख्या में कार्मिकों की तैनाती की गई है।

ग्रीन एण्ड क्लीन कांवड़ यात्रा हेतु सफाई एवं स्वचछता व्यवस्था

कांवड़ यात्रा के दौरान नगर निगम क्षेत्र हरिद्वार में नगर निगम द्वारा 1650 पर्यावरण मित्रों एवं सफाई कर्मचारियों की तैनाती के साथ ही 10 मुख्य सफाई निरीक्षकों की तैनाती की गई है जोकि प्रतिदिन 24*7 के आधार पर दिन-रात सफाई व्यवस्था में लगे हुए हैं। नगर निगम हरिद्वार द्वारा स्वच्छता हेतु 215 डस्टबिन लगाए गए हैं तथा कूड़े के उचित निस्तारण हेतु 90 वाहनों की व्यवस्था की गई है। इसके साथ ही 180 टिनशैड शौचालय, 58 सार्वजनिक शौचालय, 08 स्मार्ट टायलेट, 40 मोबाइल टायलेट तथा 120 एफआरपी शौचालय (एफआरपी शौचालय ऐंसे शौचालय होते हैं जोकि स्वच्छता आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। इन्हें उच्च स्वच्छता मानकों को सुनिश्चित करने और आरामदायक व कार्यात्मक अनुभव प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इनका आंतरिक भाग सौंदर्यपरक रूप से मनभावन है। प्रत्येक यूनिट में पानी की व्यवस्था, एक उचित सीवेज संग्रहण प्रणाली, और प्रकाश व्यवस्था आदि शामिल हैं। एफआरपी शौचालय एक विश्वसनीय और स्वच्छ समाधान प्रदान करते हैं) की व्यवस्था की गई है। कांवड़ यात्रा के दौरान जिला पंचायत द्वारा 19 स्थायी शौचालयों 7 चैंजिंग रूम तथा 6 अस्थायी शौचालय व 7 अस्थायी चैंजिंग रूम संचालित किये जा रहे हैं।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य व्यवस्था

कांवड़ यात्रा पर आने वाले श्रद्धालुओं के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए कांवड़ मेला क्षेत्र में 29 अस्थायी चिकित्सा शिविरों की व्यवस्था की गई है। जिसमें 89 चिकित्सकों, 117 फार्मेसिस्टों, तथा 150 अन्य पैरामेडिकल स्टाफ की तैनाती की गई है तथा समस्त मेला क्षेत्र में निजि व सरकारी कुल 66 एम्बुलेंस की व्यवस्था उपलब्ध है।

विद्युत एवं प्रकाश व्यवस्था

दिन-रात चलने वाली कांवड़ यात्रा मार्गो एवं पार्किंग स्थलों पर कांवड़ यात्रियों की सुरक्षा के दृष्टिगत प्रकाश एवं लाइट की व्यवस्था हेतु विभिन्न आवश्यकता वाले क्षेत्रों में 100 जनरेटर के साथ ही 7500 स्ट्रीट लाइटों की व्यवस्था की गई है।

क्षतिग्रस्त नहर पटरी मार्ग बन रहा कांवड़ियों के लिए मुसीबत

हरिद्वार (संवाददाता) । कांवड़ियों के लिए नहर पटरी मार्ग तो खोल दिया गया है, लेकिन मार्ग कई जगह क्षतिग्रस्त होने से कांवड़ियों को चलने में परेशानी हो रही है। जगह-जगह गड्ढे होने से कांवड़ियों का आवाजाही करने में संतुलन बिगड़ रहा है जिससे कांवड़ को नीचे रखने से भी गंगाजल खंडित होने का खतरा रहता है। मार्ग क्षतिग्रस्त होने से पैरों में पत्थर, कंकड़ भी चुभते हैं। बैठकों में जिलाधिकारी द्वारा गड्ढे भरने के निर्देश भी दिए गए थे, लेकिन उस पर अमल होता नहीं दिख रहा। शंकराचार्य चौक के पास नहर पटरी मार्ग क्षतिग्रस्त है, उसे ठीक नहीं किया गया। वहां पर कांवड़ियों को भारी परेशानी हो रही है। जबकि प्रेमनगर चौक के पास नहर पटरी के गड्ढे को मिट्टी से भर तो दिया है, लेकिन बारिश होते ही सारी मिट्टी बह जाएगी।

चारधाम यात्रा रजिस्ट्रेशन में आई गिरावट

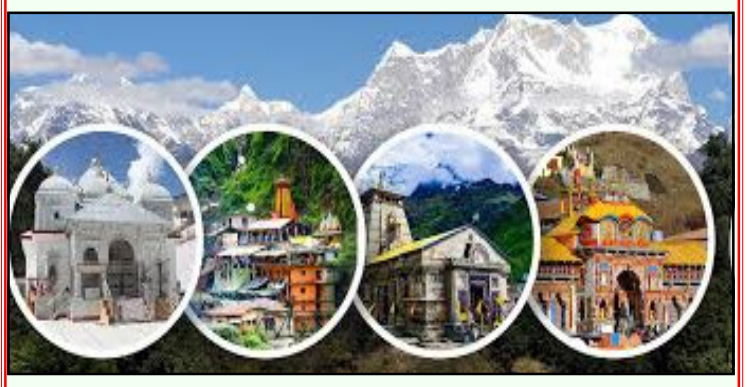

हरिद्वार (संवाददाता) । राज्य में हो रही बारिश का सीधा असर चारधाम यात्रा में पर भी पड़ रहा है। एक समय में ऋषिकुल मैदान में बने चारधाम रजिस्ट्रेशन काउंटर में एक दिन में चार हजार तक ऑफलाइन रजिस्ट्रेशन होते थे, लेकिन मानसून की बारिश के चलते दस दिन में 4727 यात्री ही हरिद्वार से चारधाम के लिए रजिस्ट्रेशन करवा रहे हैं। चारधाम यात्रा के शुरुआती चरण में यात्रियों की सुविधा के लिए ऋषिकुल मैदान में ऑफलाइन रजिस्ट्रेशन काउंटर खोला गया था। जिसमें 20 रजिस्ट्रेशन काउंटर बनाये गए थे। इस दौरान रजिस्ट्रेशन काउंटर पर यात्रियों की लम्बी कतार देखने को मिलती थी। कई बार एक ही दिन में चार हजार से अधिक यात्रियों का रजिस्ट्रेशन भी किया गया, लेकिन जून के अंतिम सप्ताह में बारिश होने से यात्रियों की संख्या में गिरावट आ गई।

भारतीय ज्ञान में शास्त्रीय संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका : डॉ. शिखा

हरिद्वार (संवाददाता) । महिला विद्यालय डिग्री कालेज सतीकुण्ड में शुक्रवार को सेमिनार में मुख्य वक्ता डॉ. शिखा ममगई ने बताया कि संगीत में भारतीय ज्ञान परम्परा और गुरु शिष्य परम्परा दोनों महत्वपूर्ण है। भारतीय ज्ञान में शास्त्रीय संगीत एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने कहा कि संगीत हमारे जीवन में सकारात्मक बदलाव लाता है और हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर करता है। संगीत सुनने से मन में डोनामाइन हार्मोन का स्तर बढ़ता है। जिससे खुशी मिलती है। संगीत शिक्षा से भावनात्मक बुद्धिमत्ता बढ़ती है। सगीत शिक्षा से टीमवर्क, सहयोग और संचार सीखने में मदद मिलती है।

ऑपरेशन 'कालनेमि' का संतों ने किया स्वागत

हरिद्वार (संवाददाता) । मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने बीते दिन ऑपरेशन 'कालनेमि' लॉन्च कर दिया है। साथ ही सीएम धामी ने अधिकारियों को सनातन धर्म की आड़ में लोगों को ठगने और भावनाओं से खिलवाड़ करने वालों पर सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। जिसके बाद सीएम धामी के इस कदम का संतों ने स्वागत किया है। अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद अध्यक्ष श्रीमहंत रविन्द्र पुरी ने कहा कि उत्तराखंड में साधु संतों के भेष में फर्जी तरह से रह रहे लोगों की पहचान के लिए ऑपरेशन कालनेमिचलाए जाने का फैसला स्वागत योग्य है। उन्होंने कहा कि जिस तरह से राक्षस श्कालनेमि द्वारा साधु का भेषधारण कर हनुमान को रोकने का काम किया था, उसी प्रकार कुछ फर्जी आपराधिक और सनातन विरोधी लोग धर्म को बदनाम करने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसे लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई होनी आवश्यक है। वहीं अखंड परशुराम अखाड़ा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंडित अधीर कौशिक ने भी धामी सरकार के इस फैसले का स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि जिन लोगों का ना तो किसी अखाड़े से संबंध हैं और ना ही कोई ज्ञान है, ऐसे फर्जी संतों की पहचान कर जेल भेजना चाहिए। वहीं कई अन्य संतों के द्वारा भी प्रदेश सरकार द्वारा ऑपरेशन श्कालनेमिश् चलाए जाने के फैसले का स्वागत किया है। उनका कहना है कि सनातन की रक्षा के लिए सरकार का यह फैसला काफी सराहनीय फैसला है। श्कालनेमिश् एक ऐसा अभियान है जो धार्मिक आस्था की आड़ में ठगी और अपराध करने वालों के खिलाफ चलेगा। दरअसल, पिछले कुछ समय से उत्तराखंड में कई जगहों से ऐस छद्म वेषधारी असामाजिक तत्व पकड़े जा रहे थे, जो साधु-संतों के वेष में भोले-भाले नागरिकों और खासकर महिलाओं को ठगने का काम कर रहे हैं, उसके लिए यह अभियान शुरू किया गया है।

संदिग्ध हालात में शामली का छात्र लापता

रुड़की । रुड़की के माजरा स्थित पुराने कमरे से दोस्त के साथ सामान लेने गया शामली का छात्र गुरुवार को संदिग्ध हालात में लापता हो गया। परिजन दोस्तों पर ही छात्र के अपहरण का आरोप लगा रहे हैं। हालांकि, पुलिस छात्र के दो दोस्तों से पूछताछ कर रही है। साथ ही सीसीटीवी कैमरों की भी मदद ली जा रही है। शामली जिले के गांव हसनपुर लुहारी निवासी 20 वर्षीय अर्पित सैनी उर्फ हैप्पी पुत्र कुलदीप एक साल से रुड़की के एक निजी कॉलेज में ग्रेजुएशन की पढ़ाई कर रहा था। इस साल अर्पित ने किन्हीं कारणों से कॉलेज की परीक्षा नहीं दी। जब कॉलेज की ओर से इस बाबत नोटिस छात्र के घर पहुंचा तो पिता कुलदीप गुरुवार को अर्पित को लेकर रुड़की आए। उस समय अर्पित के दोस्त माजरा स्थित पुराने कमरे का सामान रामपुर चुंगी स्थित नए कमरे में शिफ्ट कर रहे थे।

अतुल्य भारत, अजेय भारतः मोदी युग ने पर्यटन को कैसे नया स्वरुप दिया

गजेंद्र सिंह शेखावत

पिछले दशक में, भारत की पवित्र भूमि को सिर्फ देखा ही नहीं गया है – बल्कि इसे फिर से खोजा गया है। पहाड़ अब सिर्फ परिदृश्य नहीं रह गए हैं; वे जीवित अभयारण्य हैं। केदारनाथ और बद्रीनाथ के बर्फ से ढके मंदिरों से लेकर बोधगया की ध्यानपूर्ण शांति और सारनाथ की सुनहरी नीरवता तक, भारत की आध्यात्मिक आत्मा ने एक-एक तीर्थयात्री की भावना को उद्वेलित किया है। इस युग में पर्यटन, विवरण पुस्तिका (ब्रोशर) के जरिए नहीं, बल्कि भक्ति, स्मृति और फिर से जुड़ने की सभ्यतागत प्रेरणा के जरिए तैयार किया गया था।

2014 और 2024 के बीच, इस आध्यात्मिक जागृति ने देश के सांस्कृतिक मानचित्र को नया स्वरुप दिया। केदारनाथ, जो कभी त्रासदी का प्रतीक था, फीनिक्स की तरह उभरा – 2024 में यहां 16 लाख से ज्यादा तीर्थयात्री आये, जबकि एक दशक पहले यह संख्या केवल 40,000 थी। उज्जैन को महाकाल के शहर के रूप में पुनर्जीवित किया गया, इसने 2024 में 7.32 करोड़ आगंतुकों का स्वागत किया। प्रकाश और पवित्रता में पुनर्जन्म लेने वाली काशी ने 11 करोड़ लोगों को अपनी पवित्र गलियों में भ्रमण करते देखा। बोधगया और सारनाथ की गूंज कई महाद्वीपों में सुनायी दी, दोनों तीर्थस्थलों ने 2023 में 30 लाख से ज्यादा साधकों को आकर्षित किया।

और फिर एक ऐसा क्षण आया, जो आंकड़ों से पार चला गया ख़ जनवरी 2024 में अयोध्या में राम लला की प्राण प्रतिष्ठा। यह कोई उद्घाटन नहीं था; यह सभ्यता की ध ड़कन का जीर्णोद्धार था। महज छह महीनों में, 11 करोड़ से ज्यादा श्रद्धालुओं का आगमन हुआ ख़न सिर्फ देखने के लिए, बल्कि इससे जुड़ने के लिए। लगभग इतना ही ऐतिहासिक था, महाकुंभ 2025, जो दुनिया का सबसे बड़ा आध्यात्मिक समागम था, जिसमें 65 करोड़ से ज्यादा तीर्थयात्री आस्था और उत्कृष्टता के संगम पर पहुंचे। अयोध्या और प्रयागराज, साथ मिलकर, भारत के आध्यात्मिक पुनर्जागरण के दो प्रकाश स्तंभ बन गए।

यह पर्यटन नहीं थाख़यह घर वापसी थी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में इस वापसी को आकार, अवसंरचना और आत्मा दी गई। अब पर्यटन एक जांच सूची (चेकलिस्ट)-संचालित उद्योग नहीं रहा, बल्कि पवित्र श्स्व्ा को फिर से खोजने का एक राष्ट्रीय मिशन बन गया। प्रधानमंत्री मोदी के दूरदर्शी मंत्र – भारत में विवाह करें, भारत की यात्रा करें, भारत में निवेश करें – ने पर्यटन को एक सांस्कृतिक आह्वान में बदल दिया।

मोदी सरकार ने प्रारंभ से ही पर्यटन को राष्ट्रीय पुनरुत्थान की ताकत के रूप में देखा है। स्वदेश दर्शन और इसके उन्नत रूप, स्वदेश दर्शन 2.0 के माध्यम से, पर्यटन मंत्रालय ने रामायण, बौद्ध, तटीय और आदिवासी जैसे विषयगत सर्किट के तहत 110 परियोजनाएँ विकसित कीं। 2014-15 में शुरू की गई मूल योजना में कुल 5,287.90 करोड़ रूपये की लागत से 76 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई थी। स्वदेश दर्शन 2.0 में, स्थाई गंतव्यों को विकसित करने के लिए 2,106.44 करोड़ रूपये के साथ 52 परियोजनाएँ जोड़ीं गईं।

चुनौती आधारित गंतव्य विकास (सीबीडीडी) उप-योजना के तहत, 623. 13 करोड़ रूपये की 36 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई, जबकि एसएएससीआई योजना के अंतर्गत राज्य के नेतृत्व में पर्यटन अवसंरचना के विस्तार के लिए 3,295. 76 करोड़ रूपये की 40 परियोजनाओं को स्वीकृति दी गयी।

इसके साथ ही, प्रसाद योजना के जरिये उन्नत सुविधाओं, प्रकाश व्यवस्था और स्वच्छता के साथ 100 तीर्थ शहरों को पुनर्जीवित किया गया। इन प्रयासों से भारत में 2023 में 250 करोड़ से अधिक घरेलू पर्यटकों की यात्रा दर्ज की गयी – जो अब तक का सबसे अधिक है।

2024-25 के केंद्रीय बजट में एक ऐतिहासिक घोषणा के तहत 50 पर्यटन स्थलों को विकसित करने का प्रस्ताव रखा गया, उन्हें निवेश और वित्तपोषण को आसान बनाने के लिए अवसंरचना सामंजस्य मास्टर सूची (आईएचएमएल) में जोड़ा गया।

पुनरुद्धार केवल पवित्र स्थानों तक सीमित नहीं था। 2018 में अनावरण की गई स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, देश के सबसे अधिक देखे जाने वाले स्मारकों में से एक बन गई, जिसे 2023 में 50 लाख से अधिक आगंतुक देखने आये। इसके चारों ओर इको-टूरिज्म पार्क, टेंट सिटी और आदिवासी संग्रहालय विकसित हुए हैं – जो सम्मान को अवसर में बदल रहे हैं।

भारत का सभ्यतागत आत्मविश्वास इसकी कूटनीति में परिलक्षित होने लगा। फ्रांस, जापान, यूएई, ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण कोरिया के राजनेताओं का, न केवल दिल्ली में, बल्कि वाराणसी, उदयपुर, अयोध्या और महाबलीपुरम में भी स्वागत हुआ। सॉफ्ट पावर अब सॉफ्ट नहीं रही – यह 3डी अनुभव हो गयी। रिवर क्रूज, दीपोत्सव, आध्यात्मिक भ्रमण और सांस्कृतिक प्रदर्शन ने राजकौशल को आत्मा के शिल्प में बदल दिया।

इस बीच, अतुल्य भारत 2.0 ने देश को स्मारकों की भूमि से बदलकर बदलाव की भूमि बना दिया। ऋषिकेश में योग, केरल में आयुर्वेद, पूर्वोत्तर में जनजातीय त्योहार और कच्छ में शिल्प ने पर्यटन इकोसिस्टम को जीवंत व विशिष्ट स्थान प्रदान किया। विपणन को अब स्मृति से अलग करना मुश्किल था।

इस क्षेत्र की आर्थिक स्थिति भी बहुत प्रभावशाली रही। अप्रैल 2000 से दिसंबर 2023 के बीच, भारत ने पर्यटन में 18 बिलियन डॉलर से अधि क का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आकर्षित किया। प्रमुख आतिथ्य अवसंरचना परियोजनाओं में 2014-22 के दौरान 9 बिलियन डॉलर का निवेश हुआ। केवल 2023 में, भारत ने 9.52 मिलियन विदेशी पर्यटकों के साथ 2. 31 लाख करोड़ रूपये (28.7 बिलियन डॉलर) की विदेशी मुद्रा अर्जित की, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 47. 9 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी। इस क्षेत्र ने 2023-24 में 84.63 मिलियन नौकरियों का सृजन किया, जो पिछले वर्ष की तुलना में 8.46 मिलियन अधि क थीं – इस प्रकार पर्यटन क्षेत्र भारत के विकास और रोजगार की आध ारशिला के रूप में उभरा।

पर्यटन एक संपूर्ण आयाम वाले मिशन के रूप में विकसित हुआ। श्एक विरासत अपनाएँ योजना के तहत प्रमुख स्थलों का कॉर्पोरेट प्रबंध न शुरू हुआ, जबकि उड़ान योजना ने शिरडी, जीरो और मिनिकॉय जैसे दूर-दराज के स्थानों को हवाई मार्ग से जोड़ा। राष्ट्रीय डिजिटल पर्यटन मिशन ने टिकट बुकिंग, डेटा और यात्रा कार्यक्रमों का एक एकीकृत प्लेटफॉर्म में एकीकरण करना शुरू किया।

पूर्वोत्तर- जो कभी उपेक्षित था- मुकुट के एक र प्रतिशत के रूप में उभरा। एक्ट ईस्ट नीति और अवसंरचना पर विशेष ध्यान की वजह से अरुणाचल, सिक्किम और मेघालय जैसे राज्यों में पर्यटकों का आगमन 2014 और 2022 के बीच दोगुना हो गया। जीवंत गांव कार्यक्रम ने किबिथु और माना जैसे दूरदराज के इलाकों को ऐसे गंतव्यों में बदल दिया, जहाँ देशभक्ति का मिलन प्रकृति और विरासत से होता है।

पर्यटन का विचार भी आकांक्षापूर्ण हो गया। भारत में विवाह, राजस्थान और गोवा जैसे विवाह केंद्रों के लिए प्रोत्साहन, अभियान और अवसंरचना के समर्थन में तब्दील हो गया। इस बीच, चिकित्सा और कल्याण पर्यटन के लिए 2022 में 6 लाख से अधिक विदेशी मरीज आये, जिससे भारत दुनिया के अग्रणी उपचार स्थलों में से एक बन गया।

2023 में भारत की जी-20 अध्यक्षता, सांस्कृतिक कूटनीति का एक उत्कृष्ट प्रदर्शन था। दिल्ली तक सीमित रहने के बजाय, खजुराहो से कुमारकोम तक 60 से अधिक गंतव्यों में वैश्विक कार्यक्रमों की मेजबानी हुई, जिनमें से प्रत्येक को स्थानीय कला, खान-पान और विरासत के साथ तैयार किया गया था। दुनिया भारत के साथ सिर्फ संवाद नहीं कर रही थी – बल्कि इसे अनुभव भी कर रही थी। लेकिन आंकड़ों के पीछे, असली परिवर्तन आध्यात्मिक था।

भारत ने दुनिया से अपने स्मारकों को देखने के लिए अनुरोध करना बंद कर दिया। देश ने अपनी यादों को महसूस करने, अपनी शांति में स्वस्थ होने और अपनी विविधता का जश्न मनाने के लिए पूरी दुनिया को आमंत्रित किया।

इस नए भारत में, पर्यटन मौसमी नहीं है – यह सभ्यतागत है। यह वह स्थल है, जहाँ दर्शन का विकास से, जहाँ तीर्थयात्रा का प्रगति से और जहाँ त्योहार का अवसंरचना से मिलन होता है। नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में, भारत ने दुनिया का सिर्फ स्वागत नहीं किया – बल्कि उसे गले लगाया।

जैसे भिक्षु बोधि वृक्ष की परिक्रमा करते हैं, जैसे तीर्थयात्री केदारनाथ की ठंडी हवा में मंत्रोच्चार करते हैं, जैसे दुल्हनें महलनुमा गुंबदों के नीचे विवाह करती हैं और जैसे सीमावर्ती गाँव उत्सुक यात्रियों की मेजबानी करते हैं, एक सच्चाई हर पवित्र मार्ग और शांत गलियारे में गूंजती है: भारत केवल एक गंतव्य नहीं है, जहाँ की आप यात्रा करते हैं – यह एक ऐसा देश है, जहाँ आप कुछ शाश्वत की तलाश में बार-बार वापस आते हैं।

संकल्प की सिद्धि का समय

एक राष्ट्र की प्रगति केवल उसके आर्थिक सूचकांकों से नहीं मापी जाती, बल्कि इस बात से तय होती है कि उस विकास से आम जनजीवन में कितनी गरिमा, अवसर और आत्मबल का संचार हुआ है। जब हम आज भारत की ओर देखते हैं, तो यह केवल एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था नहीं, बल्कि एक जाग्रत समाज की तस्वीर है, जो आगे बढ़ना जानता है, जो अपने अतीत से सीखता है और अपने भविष्य को स्वयं गढ़ रहा है। मेरे लिए भारत की आर्थिक वृद्धि दर, जो वित्त वर्ष 2024-25 की अंतिम तिमाही में 7.4 प्रतिशत रही, एक आकंड़ा मात्र नहीं है। यह उस किसान की मेहनत का सम्मान है, जिसने आधुनिक तकनीक को अपनाकर पैदावार बढ़ाई। यह उस महिला उद्यमी की कहानी है, जिसने स्वयं सहायता समूह से यात्रा शुरू कर डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अपने उत्पाद दुनिया तक पहुंचाए। यह उस युवा इंजीनियर का आत्मविश्वास है, जिसने मेक इन इंडिया के अंतर्गत नौकरी ढूंढ़ने के बजाय नौकरी देने वाला बना। आज भारत की औसत विकास दर 6.5 प्रतिशत है, और नॉमिनल जीडीपी 330 ट्रिलियन को पार कर चुकी है। जीएसटी संग्रह लगातार दो महीने 2 लाख करोड़ से ऊपर रहा है। यह आर्थिक आत्मबल अब केवल महानगरों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह गाँवों, छोटे कस्बों और दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँचा है। डिजिटल क्रांति ने भारत के सामाजिक ताने-बाने में एक ऐतिहासिक परिवर्तन लाया है। गाँव का एक युवा अब मोबाइल से भुगतान करता है, सरकारी योजनाओं का लाभ सीध ा खाते में प्राप्त करता है और ऑनलाइन पढ़ाई के माध्यम से अपने सपनों को साकार करता है। आज यूपीआई के जरिए 25 ट्रिलियन से अधिक ट्रांजैक्शन हो चुके हैं। यह डिजिटल समावेशन केवल तकनीकी परिवर्तन नहीं है, यह सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण का नया अध्याय है। भारत ने वैश्विक व्यापार में भी अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज की है। केवल अप्रैल 2025 में ही भारत से 3 मिलियन आईफोन आईफोन एक्सपोर्ट हुए, चीन से तीन गुना ज्यादा। यह दर्शाता है कि भारत अब केवल बाजार नहीं, ग्लोबल वैल्यू चेन का प्रमुख स्तंभ बन चुका है। बीते दशक में भारत में 500 बिलियन से अधिक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) आया है, जो इनोवेशन, रोजगार और आत्मनिर्भरता के नए द्वार खोल रहा है। हमारे किसान भी इस बदलाव के सशक्त भागीदार बने हैं। आज 51 मिलियन किसानों के पास डिजिटल किसान आईडी है, जिससे उन्हें उनकी भूमि, फसल और योजनाओं का सीध ा लाभ मिलता है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, डिजिटल मंडियाँ, और आत्मनिर्भर कृषि मिशन जैसे प्रयासों ने उन्हें सहयोगी नहीं, सहभागी बनाया है। भारत में गरीबी दर 2011-12 के 29.5 प्रतिशत से घटकर आज 9.4 प्रतिशत रह गई है। यह केवल आर्थिक सुधार नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय का विस्तार है। विश्व बैंक की रिपोर्ट बताती है कि अत्यंत गरीबी अब मात्र 5.3 प्रतिशत रह गई है। इस परिवर्तन में उस ग्रामीण परिवार की कहानी छिपी है, जिसके बच्चे पहली बार स्कूल गए, जिसने प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा को नजदीक पाया, और जिसने आत्मनिर्भरता को अपनी पहचान बनाया। इंफ्रास्ट्रक्चर में भी भारत ने नई ऊँचाइयाँ छुई हैं। आज भारत एक साल में 1,600 इंजन बनाकर विश्व का सबसे बड़ा लोकोमोटिव निर्माता है। ऊर्जा क्षेत्र में 49 प्रतिशत क्षमता अब नवीकरणीय स्रोतों से है। भारत अब सस्टेनेबल विकास की राह पर तेजी से अग्रसर है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे क्षेत्रों में भी भारत की क्षमता को वैश्विक मान्यता मिल रही है। ओपनएआई जैसी संस्थाओं ने भारत में अपना पहला अंतरराष्ट्रीय एआई अकादमी शुरू की है, यह हमारे युवाओं की प्रतिभा और संभावनाओं में भरोसे का प्रमाण है।

नए भारत की विकास यात्रा में टेक्सटाइल सेक्टर भी एक मजबूत स्तंभ बनकर उभरा है।

बोइंग की कार्यक्षमता पर उठते सवाल

विनीत नारायण

अहमदाबाद में हुई भयानक विमान दुर्घटना के बाद भारत सरकार ने दुर्घटना की जांच के लिए उच्चस्तरीय समिति गठित की है, और विमान निर्माण कंपनी बोइंग ने भी सहयोग की पेशकश की है। बोइंग रसूखदार कंपनी है। बावजूद इसके बोइंग की कार्यक्षमता पर सवाल उठते रहे हैं। सोशल मीडिया पर एक फिल्म वायरल हो रही है कि बोइंग कंपनी के ही एक इंजीनियर जॉन बार्नेट, जिन्होंने बोइंग की अंदरूनी क्षमताओं पर महत्त्वपूर्ण सवाल उठाए थे, 2024 में रहस्यमय परिस्थितियों में बोइंग कंपनी की ही कार पार्किंग में मृत पाए गए थे। जब किसी विमान दुर्घटना में पायलट भी मारे जाते हैं, तो चलन है कि पावरफुल लॉबी सांठ-गांठ करके जांच का रुख इस तरह मोड़ देती हैं कि दुर्घटना के लिए पायलट को ही जिम्मेदार ठहराया जाता है क्योंकि वो अपना पक्ष रखने के लिए अब जीवित नहीं होता। इसलिए जरूरी है कि जांच एजेंसियां इस दुर्घटना की ईमानदारी से जांच करें। दुनिया भर में लाखों लोग बोइंग कंपनी के विमानों में रोज उड़ रहे हैं। उनकी सुरक्षा के हित में भी यह जरूरी है। बोइंग अपने विरु द्ध अक्सर लगाए जाने वाले आरोपों का स्पष्ट जवाब दे और यदि निर्माण प्रक्रिया में खामियां हैं, तो उन्हें अविलंब सुधारे।

12 जून, 2025 को अहमदाबाद में हुई भयानक विमान दुर्घटना में जीवित बचे विश्वास कुमार रमेश ने पूरी दुनिया का ध्यान खींचा है। एयर इंडिया की फ्लाइट 1171 के दुखद हादसे में 242 यात्रियों और चालक दल के सदस्यों में से 241 की मौत हो गई और केवल एक यात्री, विश्वास कुमार रमेश जीवित बचे। यह घटना विमान दुर्घटनाओं में एकमात्र बचे लोगों की उन असाधारण कहानियों में से एक है, जो न केवल चमत्कार को दर्शाती हैं, बल्कि मानव की जीवटता और भाग्य की अनिश्चितता को भी उजागर करती हैं। विश्वास कुमार रमेश, 40 वर्षीय ब्रिटिश नागरिक हैं, जो भारतीय मूल के हैं। उस दिन सीट नंबर 11ए पर बैठे थे, जो एक आपातकालीन निकास द्वार के पास थी। हादसे के तुरंत बाद विश्वास ने भारतीय मीडिया को बताया, श्मैं नहीं समझ पा रहा कि मैं कैसे बच गया। सब कुछ मेरी आंखों के सामने हुआ। मैंने सोचा कि मैं भी मर जाऊंगा लेकिन जब मैंने आंखें खोलीं तो खुद को जिंदा पाया। उन्होंने बताया कि उनकी सीट के पास का हिस्सा जमीन पर गिरा और आपातकालीन निकास द्वार टूट गया था, जिसके कारण वे बाहर निकल पाए। विमान दुर्घटनाओं में एकमात्र बचे लोगों की कहानियां बेहद दुर्लभ हैं, लेकिन ये मानव की जीवटता और कभी-कभी भाग्य के खेल को दर्शाती हैं। इतिहास में कुछ ऐसी घटनाएं दर्ज हैं, जिनमें एकमात्र व्यक्ति ही जीवित बचा। जूलियन कोएपके 17 साल की जर्मन लड़की थीं जो 1971 में पेरू के अमेजन जंगल में लांसा फ्लाइट 508 की दुर्घटना में एकमात्र जीवित बची थीं। विमान 10,000 फीट की ऊंचाई से गिरा और जूलियन अपनी सीट से बंधी हुई जंगल में जा गिरीं। गंभीर चोटों के बावजूद वह 11 दिनों तक जंगल में भटकती रहीं और अंततः मदद मिलने पर बच गई। उनकी कहानी साहस और जीवित रहने की इच्छाशक्ति का प्रतीक बन गई। वेस्ना वुलोविच, सर्बियाई फ्लाइट अटेंडेंट थीं जो 1972 में फ्लाइट 367 के मध्य हवा में हुए विस्फोट के बाद एकमात्र जिंदा बची थीं। वह 33,000 फीट की ऊंचाई से गिरने के बावजूद जीवित रहीं जो गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज है।

वेस्ना को गंभीर चोटें आई थीं, लेकिन वह ठीक हो गई और बाद में अपनी कहानी साझा की। चार साल की सेसिलिया सिचन 1987 में नॉर्थवेस्ट एयरलाइंस फ्लाइट 255 के दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद एकमात्र जिंदा बची थी। यह विमान मिशिगन में दुर्घटनाग्रस्त हुआ जिसमें 154 यात्री और चालक दल के सदस्य मारे गए। सेसिलिया को मलबे में दबा हुआ पाया गया और उसकी जान बचाने के लिए व्यापक उपचार किया गया। 12 साल की बाहिया बकारी 2009 में येमेनिया एयरवेज की उड़ान के कोमोरो द्वीप समूह के पास दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद जिंदा बची थी। वह समुद्र में तैरती रही और बाद में बचाव दल द्वारा बचा ली गई। उसकी कहानी भी दुनिया भर में चर्चा बनी।

विमान दुर्घटनाओं के अलावा, अन्य दुखद हादसों में भी एकमात्र बचे लोगों की कहानियां सामने आई हैं। 1912 में टाइटैनिक के डूबने में कई लोगों की जान गई। लेकिन कुछ लोग, जैसे मिल्विना डीन जो उस समय केवल दो महीने की थी, जीवित बची। वह उन अंतिम लोगों में थी जो इस त्रासदी से बचे थे। 2004 में हिन्द महासागर में सुनामी की प्राकृतिक आपदा में लाखों लोग मारे गए लेकिन कुछ लोग जैसे कि एक इंडोनेशियाई व्यक्ति, जिसे लहरों ने समुद्र में बहा दिया था, चमत्कारिक रूप से बच गया। विमान दुर्घटना या अन्य त्रासदियों में एकमात्र बचे लोग अक्सर श्सर्वाइवर्स गिल्ट (जीवित रहने का अपराधबोध) से गुजरते हैं। विश्वास कुमार रमेश ने भी बताया कि वह अपनी जान बचने के बावजूद अपने भाई को खोने के दुख से जूझ रहे हैं। जॉर्ज लैमसन जूनियर, जो 1985 में गैलेक्सी एयरलाइंस की दुर्घटना में एकमात्र बचे थे, ने सोशल मीडिया पर लिखा कि वह विश्वास की स्थिति को समझ सकते हैं क्योंकि ऐसी घटनाएं जीवित बचे लोगों के जीवन पर गहरा प्रभाव डालती हैं।

मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि ऐसे लोग अक्सर पोस्ट-ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर से पीड़ित हो सकते हैं। विश्वास के मामले में डॉ. रजनीश पटेल ने बताया कि वह श्पोस्ट-ट्रॉमेटिक अम्नेसियाश्श से प्रभावित हो सकते हैं, जिसके कारण उन्हें दुर्घटना की पूरी तस्वीर याद नहीं है। विश्वास कुमार रमेश का जीवित रहना कई कारकों का परिणाम हो सकता है। प्रो. जॉन हंसमैन, एमआईटी के वैमानिकी विशेषज्ञ, के अनुसार विमान दुर्घटना में जीवित रहने की संभावना सीट की स्थिति, दुर्घटना के प्रकार और त्वरित निर्णय लेने पर निर्भर करती है। विश्वास की सीट आपातकालीन निकास के पास थी, जो बिना किसी बड़े नुकसान के जमीन पर जा गिरी और उन्हें बाहर निकलने का मौका मिला। इसके अलावा, उनकी त्वरित प्रतिक्रिया और भाग्य ने भी उनकी जान बचाई।

विश्वास कुमार रमेश की कहानी, अन्य एकमात्र बचे लोगों की तरह, हमें जीवन की नाजुकता और चमत्कारों की संभावना की याद दिलाती है। ये कहानियां न केवल प्रेरणादायक हैं, बल्कि विमानन सुरक्षा में सुधार की आवश्यकता को भी उजागर करती हैं।

गुरु के अतिरिक्त कोई ब्रह्म नहीं

सुनील कुमार महला

10 जुलाई 2025 को हम भारतीय संस्कृति का आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और शास्त्रीय पर्व गुरू पूर्णिमा मनाने जा रहे हैं। हर साल आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि को मनाया जाने वाला यह त्योहार गुरु और शिष्य के रिश्ते के पवित्र संबंध का प्रतीक माना जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो इस दिन शिष्य अपने गुरूओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं और उनका आशीर्वाद लेते हैं। सनातन हिंदू धर्म में गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समान माना गया है, क्योंकि वे हमें अज्ञानता के अंधकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाते हैं। गुरु शब्द का अभिप्राय ही है-'अंधेरे से उजाले की ओर ले जाने वाला।' गिरति अज्ञानान्ध कार मइति गुरुःश अर्थात् इसका मतलब यह है कि जो अपने सदुपदेशों के माध्यम से शिष्य के अज्ञानरूपी अंधकार को नष्ट कर देता है, वह गुरू है। अद्वयतारक उपनिषद (16) में गुरू का अर्थ बताया गया है। यहाँ 'गु' का अर्थ अंधकार है और 'रु' का अर्थ है दूर करने वाला। पाठकों को बताता चलूं कि रामचरित मानस के आरंभ में गोस्वामी तुलसीदास

गुरु की वंदना करते हुए 'वंदे बोधमयं नित्यं गुरु शंकर रूपिणम् कहकर आदि गुरु सदाशिव का स्थान दिया है। वास्तव में, शिव स्वयं बोध रूपरूप है, सृष्टि के सूत्र संचालक हैं। कहते हैं कि 'गुरू बिना ब्रह्म नान्यन् सत्यं वरानने।' तात्पर्य यह है कि गुरु के अतिरिक्त कोई ब्रह्म नहीं है, यह सत्य है, सत्य है। बहरहाल, कहना चाहूंगा कि गुरु पूर्णिमा का त्योहार भारत ही नहीं बल्कि नेपाल और भूटान में भी बड़े पैमाने पर मनाया जाता है। ज्योतिष पंचांग के मुताबिक आषाढ़ माह की पूर्णिमा तिथि की शुरुआत 10 जुलाई को रात 01 बजकर 37 मिनट पर होगी और अगले दिन यानी 11 जुलाई रात को 02 बजकर 07 मिनट पर तिथि खत्म होगी और इस प्रकार से 10 जुलाई को गुरू पूर्णिमा का पर्व मनाया जाएगा। इस दिन शिष्य अपने गुरू के प्रति आभार प्रकट करते हैं और उनकी पूजा- अर्चना करते हैं।

वहीं, कुछ लोग इस दिन गुरु दीक्षा भी लेते हैं। संस्कृत में श्गुरुश शब्द आध्यात्मिक शिक्षक या मार्गदर्शक को दर्शाता है, जबकि 'पूर्णिमा' पूर्णिमा(पूर्ण चंद्रमा) का प्रतीक है। वास्तव में गुरू पूर्णिमा का पर्व हमारी सनातन भारतीय संस्कृति में हमारे सभी शिक्षकों के सम्मान के लिए समर्पित दिन है-फिर चाहे वे आध्यात्मिक मार्गदर्शक हों या अकादमिक गुरू। यह कृतज्ञता, श्रद्धा, ज्ञान और बुद्धि के मूल्यों पर जोर देता है और उन्हें बढ़ावा देता है। पाठकों को बताता चलूं कि आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा के दिन महर्षि वेद -व्यास जी का जन्म हुआ था, इसीलिए इसे व्यास पूर्णिमा(वेदव्यास जयंती) के नाम से भी जाना जाता है। पाठकों को बताता चलूं कि महर्षि वेद व्यास महाभारत, श्रीमद्भागवत समेत अट्ठारह पुराणों के रचयिता थे। पाठकों को बताता चलूं कि वेदव्यास जी ऋषि पराशर के पुत्र थे और शास्त्रों के अनुसार महर्षि व्यास को तीनों कालों का ज्ञाता माना जाता है। गौरतलब है कि गुरु पूर्णिमा के अगले दिन से सावन मास प्रारंभ हो जाता है, जिसका उत्तर भारत में बहुत महत्व है। कहते हैं कि यह वही दिन है जब भगवान गौतम बुद्ध ने सारनाथ में अपना प्रथम उपदेश दिया था। मान्यता है कि इसके बाद ही बौद्ध धर्म की शुरुआत हुई थी। इसलिए गुरु पूर्णिमा को बौद्धों द्वारा गौतम बुद्ध के सम्मान में भी मनाया जाता है।इस दिन पीले वस्त्र पहनकर पूजा-अर्चना करने का भी विधान है। पाठकों को बताता चलूं कि ज्योतिष शास्त्र में पीले रंग को गुरु बृहस्पति का कारक माना जाता है तथा उनकी पूजा से ज्ञान, समृद्धि और भाग्य की प्राप्ति होती है। इसलिए गुरु पूर्णिमा के दिन अपने गुरु को पीले रंग की चीजें जैसे कि पीले वस्त्र,पीले रंग की मिठाईयां, हल्दी,पीले फल(केला,आम), पीले पुष्प, कोई धार्मिक ग्रंथ या पुस्तक आदि भेंट करनी चाहिए। कहते हैं कि ऐसा करने से गुरूओं का आशीर्वाद, सुख-समृद्धि, संपत्ति की प्राप्ति होती है। गुरू की महिमा कितनी है, इसका बखान कबीर दास जी ने क्या खूब किया है - 'गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पांय।बलिहारी गुरु अपने, गोविंद दियो बताय।।' इतना ही नहीं वे आगे एक दोहे में यह भी कहते हैं कि -'गुरु बिन ज्ञान न उपजै, गुरु बिन मिलै न मोष। गुरु बिन लखै न सत्य को, गुरु बिन मिटै न दोष।।' इसका तात्पर्य यह है कि गुरू के बिना ज्ञान का मिलना असंभव है।जब तक गुरु की कृपा प्राप्त नहीं होती, तब तक कोई भी मनुष्य अज्ञान रूपी अधंकार में भटकता हुआ माया मोह के बंधनों में बंधा रहता है, उसे मोक्ष (मोष) नहीं मिलता। गुरु के बिना उसे सत्य और असत्य के भेद का पता नहीं चलता, उचित और अनुचित का ज्ञान नहीं होता। बौद्ध धर्म ही नहीं जैन धर्म में भी इस दिन का बहुत महत्व है।जैन धर्मावलंबी भगवान महावीर और उनके प्रमुख शिष्य गौतम स्वामी के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए गुरु पूर्णिमा मनाते हैं। पौराणिक कथाओं के मुताबिक जगत गुरु भगवान शिव ने इसी दिन से सप्तऋषियों को योग सिखाना शुरू किया था। कहते हैं कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने अध्यात्मिक गुरु श्रीमद राजचंद्र को श्रद्धांजलि देने के लिए भी गुरु पूर्णिमा का दिन ही चुना था। इस दिन स्नान-दान का भी काफी महत्व माना जाता है।

मेरे लिए दिव्य प्रेम: प्यार और रहस्य की कहानी में काम करना अवसर की तरह : श्रुति आनंद

अभिनेत्री श्रुति आनंद अपनी अपकमिंग ड्रामा सीरीज शदिव्य प्रेम: प्यार और रहस्य की कहानी के साथ फैंटेसी की दुनिया में कदम रखने जा रही हैं। इस शो में वह दिव्या की मां नेत्रा की अहम भूमिका निभाएंगी। यह शो उनके लिए खास है, क्योंकि यह उनकी पहली फैंटेसी प्रोजेक्ट है।

श्रुति ने इस नए अनुभव के बारे में उत्साह जताते हुए कहा, यह मेरा पहला फैंटेसी शो है और यही इसे मेरे लिए खास बनाता है। मैंने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं किया, मैं पहली बार ऐसे किरदार में काम करने जा रही हूं। जब मुझे कॉल आया और बताया गया कि कहानी मेरे किरदार से शुरू होती है, तो मैं यह सुनकर उत्साहित हो गई।

श्रुति ने अब तक दो शो किए हैं, जिनमें उन्होंने सकारात्मक और प्यारी लड़कियों की भूमिकाएं निभाई थीं। लेकिन फैंटेसी उनके लिए एक नई दुनिया है।

उन्होंने कहा, मैं फैंटेसी की दुनिया को तलाशना चाहती थी और यह शो मुझे वह मौका दे रहा है।

श्रुति ने इसे एक सीखने की यात्रा बताया। वह कहती हैं, मैं बहुत कुछ सीख रही हूं, जैसे फैंटेसी सीन कैसे शूट होते हैं, ग्राफिक्स और स्पेशल इफेक्ट का इस्तेमाल कैसे होता है और मैजिकल सीन्स को कैसे जीवंत किया जाता है। हमारे निर्देशक को इस शैली में बहुत अनुभव है। वे मुझे सही मुद्रा से लेकर जादुई क्षणों में अभिनय तक, हर चीज कदम-कदम पर सिखा रहे हैं। मैं इस नई यात्रा का पूरा आनंद ले रही हूं।

शदिव्य प्रेम: प्यार और रहस्य की कहानी में श्रुति के साथ मेघा और सूरज प्रताप सिंह भी अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे।

यह शो प्यार, रहस्य और जादू का अनोखा मिश्रण है। दर्शकों को इस फैंटेसी ड्रामा का बेसब्री से इंतजार है। शो का प्रीमियर 16 जून से सन नियो चौनल पर होगा।

श्रुति की यह नई शुरुआत उनके प्रशंसकों के लिए एक खास तोहफा होगी, और उनकी मेहनत इस शो को और भी खास बनाएगी।

बॉक्स ऑफिस पर मां ने भी नहीं किया कमाल, सितारे जमीन पर हुई 100 करोड़ के पार

काजोल की हॉरर-मायथोलॉजिकल फिल्म मां सिनेमाघरों में लगी हुई है। फिल्म की न तो दर्शकों और समीक्षकों ने कुछ खास तारीफ की और ना ही बॉक्स ऑफिस पर यह कमाल दिखा रही है। मां के साथ 3 साल बाद काजोल की बड़े पर्दे पर वापसी हुई। फिल्म के दूसरे दिन की कमाई के आंकड़े सामने आ गए हैं। उधर आमिर खान की 9 दिन पुरानी फिल्म सितारे जमीन पर ने 9वें दिन ध माका कर दिया है।

शुक्रवार को 4.65 करोड़ के साथ बॉक्स ऑफिस पर अपनी शुरुआत करने वाली मां की शनिवार को यानी रिलीज के दूसरे दिन कमाई में उछाल देखने को मिला। वीकेंड का लाभ उठाते हुए शनिवार को मां ने 6.18 करोड़ का कारोबार किया। इस तरह से 2 दिनों में इसका कुल कारोबार 10.83 करोड़ रुपये हो गया है। हालांकि, फाइनल आंकड़ों में थोड़ा फेरबदल हो सकता है। उम्मीद की जा रही है कि रविवार को इसकी कमाई में और इजाफा होगा। मां अजय देवगन के शैतान यूनिवर्स का हिस्सा है। हॉरर फिल्म छोरी वाले विशाल फुरिया ने इसके निर्देशन की कमान संभाली है। जियो स्टूडियोज और देवगन फिल्म्स ने फिल्म को प्रोड्यूस किया है। मां की कहानी एक ऐसी औरत की है, जो अपनी बेटी को शैतानी ताकतों से बचाने के लिए हर हद पार कर जाती है। फिल्म में काजोल के अलावा इंद्रनील सेनगुप्ता, रोनित रॉय और खीरिन शर्मा जैसे कलाकार भी अहम भूमिका निभा रहे हैं।

उधर आमिर खान की सितारे जमीन पर पहले ही दिन से दिल जीत रही है। इसने 9वें दिन 13.63 करोड़ रुपये का कारोबार किया है और इसी के साथ इसने भारत में 100 करोड़ रुपये के क्लब में एंट्री ले ली है। इसकी कुल कमाई भारत में 109.55 करोड़ रुपये हो गई है। यह आमिर के करियर की सातवीं सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म बन गई है। फिल्म में आमिर की जोड़ी पहली बार जेनेलिया डिसूजा संग बनी है।

दूसरी तरफ मां के साथ रिलीज हुई विष्णु मांचू की फिल्म कन्नप्पा में अक्षय कुमार, मोहनलाल और प्रभास जैसे बड़े सितारे शामिल हैं। फिल्म ने पहले ही दिन 9.35 करोड़ की कमाई के साथ बढ़िया शुरुआत की, लेकिन कन्नप्पा को दूसरे दिन झटका लगा है, क्योंकि शनिवार को फिल्म की कमाई बढ़ने की बजाय और घट गई। इसने महज 7 करोड़ रुपये कमाए। इस तरह से 2 दिनों में कन्नप्पा ने कुल 16.35 करोड़ रुपये का कारोबार कर लिया है।

शनाया कपूर ने ऑफ-शोल्डर बॉडीकॉन ड्रेस में ढाया कहर

शनाया कपूर ने एक बार फिर अपने लेटेस्ट फोटोशूट से सोशल मीडिया पर हलचल मचा दी है। शनाया ने ऑफ-शोल्डर बॉडीकॉन ड्रेस में कुछ बेहद खूबसूरत तस्वीरें अपने इंस्टाग्राम पर शेयर की हैं। इन तस्वीरों में उनका कॉन्फिडेंस, पोज और एलिगेंस फैंस का दिल जीत रहा है। शनाया कपूर ने पोस्ट के कैप्शन में लिखा, यहाँ हम चलते हैं और साथ में एकेजी 11 जुलाई भी टैग किया, जिससे अंदाजा लगाया जा रहा है कि ये उनके किसी अपकमिंग प्रोजेक्ट या शूट का हिस्सा हो सकता है। तस्वीरों में शनाया का मिनिमल मेकअप और सॉफ्ट कर्ल्स में हेयरस्टाइल उनके लुक को और भी क्लासी बना रहा है।

जैसे ही शनाया ने ये तस्वीरें शेयर कीं, सोशल मीडिया पर तारीफों की बाढ़ आ गई। तारा सुतारिया, महीप कपूर से लेकर अनिल कपूर तक कई सेलेब्स ने उनके लुक की जमकर तारीफ की। किसी ने उन्हें ग्लोइंग कहा तो किसी ने हॉट बताया। वहीं फैंस भी दिल और फायर इमोजी के साथ कमेंट कर रहे हैं। शनाया कपूर का ये स्टाइलिश अवतार फैंस के बीच तेजी से वायरल हो रहा है। कुछ ही घंटों में हजारों लाइक्स और कमेंट्स आ चुके हैं। शनाया का यह ग्लैमरस लुक साबित करता है कि वह न सिर्फ एक्टिंग बल्कि फैशन के मामले में भी इंडस्ट्री में अपनी अलग पहचान बना रही हैं।

शनाया कपूर का ये अंदाज एक बार फिर यह दिखाता है कि वह नई जेनरेशन की फैशन आइकन बनने की पूरी काबिलियत रखती हैं। फैंस अब बेसब्री से उनके अपकमिंग प्रोजेक्ट्स का इंतजार कर रहे हैं।

नंदमुरी बालकृष्ण गोपीचंद मालिनेनी के साथ अगली फिल्म ऐतिहासिक महाकाव्य एनबीके111 की घोषणा

जनता के भगवान नंदमुरी बालकृष्ण लगातार ब्लॉकबस्टर फिल्मों के साथ आगे बढ़ रहे हैं। बालकृष्ण की 111वीं फिल्म की आधिकारिक घोषणा की गई। फिल्म एनबीके111 को ब्लॉकबस्टर निर्माता गोपीचंद मालिनेनी द्वारा निर्देशित किया जाएगा, और यह वीरा सिम्हा रेड्डी जैसी हिट फिल्म के बाद उनका दूसरा सहयोग है। वेंकट सतीश किलारू जो वर्तमान में पेड्डी जैसी पैन इंडिया फिल्म बना रहे हैं, वे वृद्धि सिनेमा बैनर पर उच्च बजट के साथ बड़े पैमाने पर नई परियोजना को वित्तपोषित करेंगे। घोषणा पोस्टर में एक उग्र शेर की भयंकर छवि दिखाई गई है। उसका आध ा चेहरा धातु की ढाल से ढका हुआ है, जबकि दूसरा आधा खुला और जंगली है। यह आकर्षक छवि उस किरदार की गहन द्वंद्व और कच्ची शक्ति का प्रतीक है जिसे बालकृष्ण इस फिल्म में निभाने वाले हैं। निर्देशक गोपीचंद मालिनेनी, जो बड़े पैमाने पर और व्यावसायिक मनोरंजन में अपनी विशेषज्ञता के लिए जाने जाते हैं, पहली बार ऐतिहासिक क्षेत्र में काम करेंगे। वह बालकृष्ण के लिए एक अभूतपूर्व अवतार तैयार कर रहे हैं, जिसमें एक महाकाव्य कहानी है जो भव्यता, इतिहास और उच्च-ऑक्टेन एक्शन को मिलाने का वादा करती है।

जरूरी हैं मॉनसून में बच्चों की इम्यूनिटी को किया जाए बूस्ट, ये आहार रहेंगे बेस्ट

मॉनसून के दिनों की शुरुआत हो चुकी हैं और बरसात ने वातावरण में ठंडक लाने का काम किया हैं। लेकिन इस सुहाने मौसम के साथ ही कई तरह की बीमारियों का भी आगमन होता हैं जिनसे बच्चो को सुरक्षित रख पाना एक बड़ी चुनौती होती हैं। इन दिनों में सर्दी-जुकाम, खांसी और बुखार की समस्या बढ़ने लगती हैं और बच्चों की इम्युनिटी कम होने की वजह से बच्चे जल्दी से इसकी चपेट में आ जाते हैं। ऐसे में जरूरी हैं कि बच्चों की इम्युनिटी को मजबूत बनाया जाए और बीमारियों से संरक्षण किया जाए। आज इस कड़ी में हम आपको कुछ ऐसे आहार की जानकारी देने जा रहे हैं जिनका सेवन बच्चों के इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाने का काम करेगा। आइये जानते हैं इनके बारे में...

आंवला

जुकाम और फ्लू के इलाज या इम्यूनिटी बढ़ाने के काम आता है आंवला। कई सालों से दवा के रूप में आंवले का सेवन किया जाता रहा है। आंवले में भरपूर मात्रा में विटामिन सी होता है जो शरीर में कई इंफेक्शन और बीमारियों से लड़ने में मदद करने वाली सफेद रक्त कोशिकाओं के निर्माण को बढ़ावा देता है। इसके अलावा आंवले में आयरन, कैल्शियम और कई अन्य तरह के खनिज पदार्थ मौजूद होते हैं। आप बच्चे को आंवले का जूस भी दे सकते हैं। 100 ग्राम आंवले में 600 मिलीग्राम विटामिन सी होता है।

हरी पत्तेदार सब्जियां

पत्तागोभी, पालक, ब्रोकली और केल जैसी हरी पत्तेदार सब्जियों में विटामिन ए, सी, के, कैल्शियम, आयरन, पोटैशियम और मैग्नीशियम जैसे पोषक तत्व भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। इनके सेवन से संक्रमण से लड़ने और इम्यूनिटी बढ़ाने में मदद मिलती है। बच्चों के आहार में इनको जरूर शामिल करना चाहिए।

खट्टे फल

जैसा कि खट्टे फल यानि सिट्रस फ्रूट्स विटामिन सी का भंडार होते हैं और विटामिन सी इम्यूनिटी बढ़ाने वाला तत्व माना जाता है। खासकर, गर्मियों में संतरा और नींबू जैसे खट्टे फलों का सेवन करने से शरीर में पानी की कमी होने का रिस्क भी कम होता है। गर्मियों में बच्चों को संतरा, नींबू, चकोतरा और कीवी जैसे विटामिन सी रिच फल खिलाएं। इसी तरह नींबू की शिकंजी, संतरे का जूस, लेमनेड जैसे ड्रिंक्स भी पिलाएं।

दही

हेल्दी फूड होने के साथ-साथ दही एक हेल्दी प्रोबायोटिक भी है। यह गट की हेल्थ बेहतर रखता है जिससे भोजन से प्राप्त पोषण का भी फायदा शरीर को मिल सकता है। ये डाइजेशन सिस्टम के लिए भी अच्छा होता है। आप बच्चों को खाने के साथ दही देंगे, तो उनकी इम्यूनिटी अच्छी रहेगी। वहीं, इसमें विटामिन डी की भी मात्रा काफी अधिक होती है जो हड्डियों को मजबूत बनाने और शरीर की रोग-प्रतिरोधक शक्ति बढ़ानेवाला तत्व है। गर्मियों में बच्चों को नाश्ते और लंच में दही खिला सकते हैं। इसके अलावा उन्हें दही से बनी छाछ, श्रीखंड और लस्सी पीने के लिए भी दें।

लहसुन

खाने का स्वाद बढ़ाने वाले लहसुन में एलिसिन नाम तत्व होता है जिसमें एंटीवायरल, एंटीफंगल और एंटीबैक्टीरियल गुण होते हैं। आज भी ग्रामीण इलाकों में लोग लहसुन को भूनकर खाते हैं, ताकि वे सर्दी या जुकाम से बचे रहें। इसे इम्यूनिटी बूस्ट करने वाला सुपरफूड भी माना जाता है। यह सफेद रक्त कोशिकाओं की रोग से लड़ने की प्रतिक्रिया को बढ़ाकर आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा देता है।

संतरा

संतरा इम्यूनिटी बढ़ाने का सबसे आसान तरीका है। संतरे के जूस से इम्यून सिस्टम को काफी मदद मिल सकती है क्योंकि इसमें कई तरह के विटामिन और पोषक तत्व मौजूद होते हैं। विटामिन सी कोशिकाओं को सुरक्षित रखकर और इम्यून कोशिकाओं के कार्य और उत्पादन को बढ़ावा देकर इम्यून कोशिकाओं को मजबूती प्रदान करता है। चूंकि, सतरे में विटामिन सी ज्यादा होता है इसलिए इससे इम्यून सिस्टम मजबूत बनता है। एक 100 ग्राम संतरे में 42 ।72 मिलीग्राम विटामिन सी होता है।

हल्दी

औषधीय गुणों से भरपूर हल्दी को लंबे समय से देसी इलाज के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। एंटीबैक्टीरियल, एंटीसेप्टिक व अन्य गुणों से युक्त हल्दी का सेवन करने की सलाह आयुर्वेद में भी दी गई है। रोजाना रात में सोने से पहले बच्चे को हल्दी वाला दूध जरूर पिलाएं। हल्दी इंफेक्शन से लड़ने का काम करती है और इसमें एंटी-इंफ्लामेट्री गुण होते हैं जो जुकाम और फ्लू से लड़ते हैं।

ड्राई फ्रूट्स और सीड्स

आपको बता दें कि ड्राई फ्रूट्स में जिंक, आयरन, विटामिन- ई, ओमेगा 3 फैटी एसिड्स आदि भरपूर मात्रा में होते हैं, जो किसी भी तरह के इंफेक्शन को बढ़ने से रोकते हैं। ऐसे में आप बच्चों को सुबह-सुबह ड्राई फ्रूट्स ज़रूर खिलाएं।

बुक पढ़ने के उद्देश्य को पहचानें

नियमित रूप से किताबें पढ़ना न सिर्फ आपकी कल्पना को बढ़ाता है और याददाश्त में सुधार करता है बल्कि इसकी मदद से तनाव से भी छुटकारा मिलता है। एक बेहतर पाठक बनने के लिए आपको धैर्य, समय और अभ्यास की जरूरत होती है और ये गुण आपके समग्र शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर रखने में काफी मदद कर सकते हैं। आइए आज हम आपको कुछ ऐसी टिप्स देते हैं, जिन्हें अपनाकर आप कोई भी बुक ध्यानपूर्वक पढ़ सकते हैं।

धीरे-धीरे पढ़ें

अगर आपने हाल ही में बुक पढ़ने में रूचि दिखाई है तो इसे धीरे-धीरे और ध्यान से पढ़े क्योंकि इससे आपको स्टोरी को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलेगी। तेजी से पढ़ने से आपके लिए यह समझना मुश्किल हो जाएगा कि आप क्या पढ़ रहे हैं। धीरे-धीरे पढ़ने से एकाग्रता क्षमता में भी सुधार होता है। वहीं, अगर आप किसी भी जानकारी को प्राप्त करने में असमर्थ होते हैं तो स्टोरी के पैसेज को दोबारा पढ़ें।

पढ़ते समय अपने पास एक पेन/पेंसिल रखें

पढ़ते समय चीजों को नोट डाउन करने से आपको बुक को बेहतर और गहराई से समझने में काफी मदद मिल सकती है।

इसलिए बुक पढ़ते समय अपने पास एक पेन/पेंसिल जरूर रखें। इसके अतिरिक्त, आप जिन नए शब्दों को सीखना चाहते हैं, उन्हें नोट कर लें और डिकशनरी में से उनका अर्थ जानें। वहीं, अपने कुछ पसंदीदा वाक्यों को हाइलाइट करें ताकि आप उन्हें कभी भी बिना किसी परेशानी के खोज सकें।

ध्यान भटकाने वाली चीजों से बनाएं दूरी

बुक पढ़ते समय अपना स्मार्टफोन खुद से दूर रखें क्योंकि इसकी वजह से आपके लिए बुक की स्टोरी पर ध्यान केंद्रित करना मुश्किल हो सकता है। बेहतर होगा कि जब भी कोई भी बुक पढ़ने बैठें तो अपने मोबाइल को किसी अन्य कमरे में रखें। इसके अतिरिक्त, हमेशा एक शांत और अच्छी रोशनी वाली जगह पर ही बुक पढ़ने बैठें ताकि आप उसकी स्टोरी को बेहतर तरीके के समझ सकें। इस तरह आपका ध्यान नहीं भटकेगा।

जोर से पढ़ने की कोशिश करें

अगर आप अपने पढ़ने के कौशल में सुधार करना चाहते हैं और स्टोरी को गहराई से समझना चाहते हैं तो इसे जोर से पढ़ें। यह तरीका आपके उच्चारण को बेहतर बनाने में मदद करेगा और इससे आपको जटिल विषय को समझने में भी मदद मिलगी। हालांकि, यह प्रक्रिया समस्याग्रस्त हो सकती है। आप इस तरीके को आसानी से घर पर अपना सकते हैं। आपके पढ़ने के पीछे का कारण आपके पढ़ने के तरीके को प्रभावित कर सकता है। आनंद के लिए नोवल पढ़ना या काम या स्कूल के लिए कोई बुक पढ़ना आपको अलग अनुभव प्रदान कर सकता है। अगर आप अपनी ग्रामर का अध्ययन या उच्चारण का अभ्यास करना चाहते हैं तो कोई ऐसी बुक पढ़ें, जो आपकी शब्दावली और उच्चारण की स्पीड बढ़ाए।

बारिश में नहाने के इन फायदों को जान आप भी नहीं रोक पाएंगे खुद को बौछार में भीगने से!

मानसून का सीजन जारी हैं और देश के हर हिस्से में बरसात की बौछार जारी हैं। कई लोग तो बरसात का इंतजार करते हैं और पहली बूंद गिरने के साथ ही भीगने के लिए घर के बाहर निकल आते हैं या छत पर पहुंच जाते हैं। लेकिन वहीँ कई लोग ऐसे हैं जो बरसात में भीगना पसंद नहीं करते हैं क्योंकि वो इसके फायदे नहीं जानते हैं। जी हां, बारिश में भीगना आपके लिए काफी फायदेमंद साबित हो सकता है। बारिश का पानी बहुत हल्का होता है और इसका पीएच क्षारीय होता है जो वॉटर थेरेपी की तरह काम करता हैं। बारिश के पानी से सेहत के साथ ही स्किन को भी फायदे पहुंचाने के गुण होते हैं। आइये जानते हैं इन फायदों के बारे में...

हार्मोनल संतुलन और मानसिक स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद

बारिश के पानी में नहाने के बाद बहुत से लोग ऐसा मानते हैं कि उन्हें बहुत अच्छी नींद आती है। ये बात गलत भी नहीं है। दरअसल ऐसा माना जाता है कि बारिश के पानी में भीगने या नहाने से व्यक्ति के शरीर में सही तरीके से हार्मोन बनता है और हार्मोन का संतुलन भी बना रहता है। वहीं ये आपको शांत करके रिलेक्स महसूस करवा सकता है। इस तरह ये हार्मोनल संतुलन और मानसिक स्वास्थ्य दोनों के लिए फायदेमंद है।

घमौरियां होती हैं दूर

गर्मी के मौसम में पसीने की वजह से घमौरियां हो जाती हैं और ज्यादातर बच्चों को यह परेशानी अधिक होती है। गर्मी की वजह से घमौरियां छोटे-छोटे दाने के रूप में पीठ और गर्दन पर हो जाती हैं और चुभती हैं। बारिश में नहाने से इस परेशानी से छुटकारा मिल जाता है।

जन समस्याओं का समाधान करना हमारी शीर्ष प्राथमिकता:मुख्यमंत्री

देहरादून,संवाददाता । केन्द्र एवं राज्य सरकार की योजनाओं का लोगों को पूरा लाभ मिले, इसके लिए लाभार्थियों को विभिन्न योजनाओं के तहत ऋण देने की प्रक्रियाओं का और सरलीकरण किया जाए। जन समस्याओं का समाधान करना हमारी शीर्ष प्राथमिकता हो। कृषि बीमा योजनाओं में बीमा क्लेम की प्रक्रियाओं के सरलीकरण की दिशा में विशेष ध्यान दिया जाए। जनपदों में ऋण जमा अनुपात बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया जाए। ये निर्देश मुख्यमंत्री श्री पुष्कर धामी ने शुक्रवार को सचिवालय में राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति की विशेष बैठक के दौरान अधिकारियों को दिए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य का ऋण जमा अनुपात बढ़ाने की दिशा में और प्रयास किए जाएं। वित्तीय वर्ष 2024-25 में राज्य का ऋण जमा अनुपात 54 प्रतिशत से बढ़कर 54.26 प्रतिशत हुआ है। मुख्यमंत्री ने कहा कि इसे 60 प्रतिशत तक ले जाने के लिए और प्रभावी प्रयास किए जाएं। राज्य के पर्वतीय जनपदों, विशेषकर टिहरी, पिथौरागढ़, रुद्रप्रयाग, अल्मोड़ा, पौड़ी और बागेश्वर जनपदों में ऋण जमा अनुपात बढ़ाने के लिए विशेष ध्यान दिया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि जन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ लोगों को एक ही स्थान पर एक ही दिन में मिले, इसके लिए अक्टूबर में सभी जनपदों में बड़े स्तर पर कैम्प का आयोजन किया जाए, जिसमें सभी विभाग और बैंकर्स साथ बैठकर जन समस्याओं का समाधान करें और उन्हें विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित करें। बैठक में जानकारी दी गई कि उत्तराखंड में प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के अंतर्गत प्रति लाख पर 48 हजार व्यक्तियों को बीमा कवरेज प्राप्त हुआ है, जो राष्ट्रीय औसत 40 हजार से अधिक है। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के अंतर्गत राज्य में प्रति ऋणकर्ता को औसत ऋण राशि 93,900 रुपये वितरित की गई है, जो राष्ट्रीय औसत 62,686 की तुलना में काफी अधिक है। प्रधानमंत्री जन-धन योजना के अंतर्गत राज्य में अब तक 39 लाख खाते खोले जा चुके हैं, यह आंकड़ा पर्वतीय राज्यों में सबसे अधिक है। वित्तीय वर्ष 2024-25 में राज्य में अग्रिमों में 10.26 प्रतिशत और जमा में 9.09 प्रतिशत की वृद्धि रही। राज्य सरकार की वीर चंद्र सिंह गढ़वाली योजना एवं मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के अंतर्गत पिछले तीन वर्षों में निरंतर अच्छी प्रगति रही। राज्य के कुल 06 लाख 10 हजार 636 किसानों ने के.सी.सी. सुविधा का लाभ लिया है, जिनमें से 67 प्रतिशत छोटे और सीमांत किसान हैं। राज्य में 70.23 प्रतिशत स्वयं सहायता समूहों का क्रेडिट लिंकेज है। विगत तीन वर्षों में एस.एच.जी. की संख्या में 21 प्रतिशत वृद्धि हुई है। बैठक में मुख्य सचिव श्री आनंद बर्द्धन, प्रमुख सचिव श्री आर.के. सुधांशु, श्री आर. मीनाक्षी सुंदरम, सचिव श्री दिलीप जावलकर, श्री नितेश कुमार झा, श्रीमती राधिका झा, श्री श्रीधर बाबू अदांकी, आरबीआई के रीजनल डायरेक्टर श्री अरविंद कुमार, एसबीआई के मुख्य महाप्रबंधक श्री देवाशीष मिश्रा, अपर सचिव श्रीमती रंजना राजगुरु, श्री हिमांशु खुराना, श्री मनमोहन मैनाली और संबंधित बैंकों के अधिकारी उपस्थित थे।

शांतिकुंज में तीन दिवसीय पावन गुरुपूर्णिमा महापर्व का शुभारंभ

जनजागरण रैली के साथ गुरु-शिष्य परंपरा के नवजागरण का आह्वान

हरिद्वार (संवाददाता)। गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में तीन दिवसीय पावन गुरुपूर्णिमा महापर्व का आज विधिवत शुभारंभ हुआ। प्रथम दिन जनजागरण रैली निकाली गई, जिसमें बड़ी संख्या में देश के विभिन्न राज्यों के श्रद्धालु, -साधकगण, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थी एवं शांतिकुंज के कार्यकर्त्ता शामिल हुए। रैली गेट नंबर 2 से प्रारंभ होकर देसंविवि, हरिपुर कलॉ होते हुए लगभग तीन किलोमीटर की परिक्रमा कर गुरुसत्ता की पावन समाधि पर आकर संपन्न हुई। रैली के दौरान गुरु-शिष्य परंपरा की पुनर्स्थापना तथा अपने सद्गुरु के आदर्शों को जन-जन तक पहुँचाने का आह्वान किया गया। गुरुसत्ता की समाधि पर सामूहिक आरती, जयघोष एवं संकल्प के साथ रैली का समापन हुआ। इस अवसर पर गायत्री परिवार प्रमुखद्वय श्रद्धेय डॉ प्रणव पण्ड्या व श्रद्धेया शैलदीदी ने अपने संदेश में कहा कि सबल सद्गुरु ही अपने शिष्य को प्रकाश की ओर ले जाने वाला पथप्रदर्शक होता है। वह उसके भीतर छिपी संभावनाओं को जाग्रत कर श्रेष्ठ मानव बनाता है। गुरु दीक्षा संगोष्ठी में वक्ताओं ने गुरु की महिमा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सद्गुरु शिष्य को जीवन की सही दिशा देकर उसे आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति की ओर ले जाते हैं। जैसे ऋषि वाल्मीकि ने श्रीराम को, संदीपनि मुनि ने श्रीकृष्ण को जीवन विद्या से अनुप्राणित किया, वैसे ही आज के युग प्रवर्तक परम पूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं माता भगवती देवी शर्मा जी ने करोड़ों परिजनों के जीवन को आध्यात्मिक दृष्टि से समृद्ध किया है।

सायंकाल एक शाम गुरुवर के नाम कार्यक्रम के अंतर्गत गायत्री विद्यापीठ के बच्चों एवं शांतिकुंज कार्यकर्त्ताओं ने गुरु परंपरा पर आधारित भजन, गीत व सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं, जो दर्शकों के लिए अत्यंत भावविभोर करने वाली रहीं।

गुरुपूर्णिमा पर्व के अंतर्गत आगामी दो दिनों तक विशेष गायत्री महायज्ञ, गुरु दीक्षा समारोह, अखण्ड गायत्री साधना एवं प्रेरणादायी विविध कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। देश-विदेश से पधारे श्रद्धालु इस पावन अवसर पर सहभागिता कर जीवन को नयी दिशा देने हेतु प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं।

आपत्तिजनक हालत में प्रेमी संग मिली महिला, पति की पिटाई की

रुड़की । पुलिस ने कोर्ट के आदेश पर पीड़ित युवक की पत्नी, उसके प्रेमी और महिला के माता-पिता के खिलाफ तलाक देने की धमकी देने, जानलेवा हमला करने के आरोप में केस दर्ज कर लिया है। केस दर्ज होने के बाद पुलिस ने मामले की पड़ताल शुरू कर दी है। पिरान कलियर क्षेत्र निवासी एक युवक ने कोर्ट में प्रार्थना पत्र देकर बताया कि 25 मई 2025 को वह मजदूरी कर दोपहर में खाना खाने घर आया तो उसने अपनी पत्नी को उसके प्रेमी के साथ आपत्तिजनक स्थिति में पकड़ लिया। इसके बाद उसकी पत्नी ने उसे तलाक देने की धमकी दी। इस बात का विरोध करने पर उसकी पत्नी ने अपने प्रेमी के साथ मिलकर लाठी-डंडों से उसके साथ मारपीट की। साथ ही उसे बांधकर अपने परिजनों को बुला लिया। इसके बाद पत्नी ने अपने प्रेमी व मायके वालों के साथ मिलकर उसे और उसके भाई को जान से मारने की नियत से लाठी-डंडों और सरिए से जानलेवा हमला कर दिया। इसमें दोनों भाई गंभीर रूप से घायल हो गए। इसके बाद आरोपी मौके से फरार हो गए। घटना के बाद पीड़ित ने पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की। लेकिन पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। इसके बाद पीड़ित ने मजबूरी में कोर्ट का दरवाजा खटखटाया। थाना प्रभारी रवींद्र कुमार ने बताया कि पुलिस ने न्यायालय के आदेश पर पत्नी, उसके प्रेमी और सास-ससुर के साथ ही अन्य अज्ञात में केस दर्जकर लिया है। साथ ही मामले की पड़ताल शुरू कर दी गई है।

महिला को बेहोश कर कानों से सोने के कुंडल चुराए

रुड़की । हसनावाला निवासी फिरोज ने बताया कि सोमवार रात को वह अपनी पत्नी उज्मा और परिवार के अन्य सदस्यों के साथ घर में सो रहे थे। देर रात करीब एक बजे कुछ लोग घर में घुस आए। सकी पत्नी उज्मा को निशाना बनाते हुए नशीला पदार्थ सुंघाकर उसे बेहोश कर दिया। कुछ देर बाद जब उज्मा नींद से जागी तो उसने देखा कि उसके कानों के कुंडल गायब हैं। फिरोज ने तत्काल पुलिस को सूचित किया। मंगलवार सुबह फिरोज ने बुग्गावाला थाने में इस मामले की लिखित तहरीर दी। क्षेत्र में करीब एक महीने से कच्छा धारी गैंग का आतंक फैला हुआ है। ग्रामीणों के अनुसार यह गिरोह रात में घरों में घुसकर चोरी की वारदात को अंजाम दे रहा है। इस कारण गांवों में रात के समय भय का माहौल है।

स्वामी,मुद्रक व प्रकाशक अवनीश कुमार द्वारा भगवती प्रिंटर्स,इण्डस्ट्रियल एरिया, हरिद्वार से छपवाकर ग्रा. बसवाखेड़ी पो. मंगलौर, हरिद्वार (उत्तराखण्ड़) से प्रकाशित किया।
सम्पादक: अवनीश कुमार, मो० 9410553400
ई-मेल: liveskgnews@gmail.com
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र हरिद्वार न्यायालय में ही होगा)
सभी लेखों में सम्पादक की सहमति जरूरी नही है।